नवसर्जन संस्कृति

RNI No.: UPHIN/25/A1698
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

लखनऊ से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 340
दि. 13.04.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

बिहार की सियासत में निर्णायक घड़ी, सत्ता परिवर्तन की आहट के बीच तेज हुआ मंथन

बिहार की राजनीति इस समय ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां हर पल बदलते समीकरण नई कहानी लिखते दिखाई दे रहे हैं। राजधानी पटना का सियासी माहौल असाधारण रूप से सक्रिय है और सत्ता के गलियारों में हलचल अपने चरम पर पहुंच चुकी है। मुख्यमंत्री आवास से लेकर पार्टी दफ्तरों तक लगातार बैठकों का दौर जारी है, जिनमें न केवल वर्तमान सरकार के भविष्य पर चर्चा हो रही है, बल्कि आने वाले समय में सत्ता के स्वरूप और नेतृत्व को लेकर भी गहन मंथन चल रहा है। इस पूरी राजनीतिक हलचल के केंद्र में हैं नीतीश कुमार, जिनके हर कदम पर राजनीतिक विश्लेषकों और आम जनता की नजर टिकी हुई है।

पिछले दो महीनों से जारी राजनीतिक उठापटक अब निर्णायक चरण में पहुंचती नजर आ रही है। सत्ता परिवर्तन की अटकलें अब केवल चर्चाओं तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि घटनाक्रम भी उसी दिशा में संकेत दे रहे हैं। जनता दल (यूनाइटेड) और भारतीय जनता पार्टी के बीच चल रही रणनीतिक बातचीत इस ओर इशारा कर रही है कि गठबंधन के भीतर संतुलन बनाने और नई सरकार के गठन की दिशा में तेजी से काम हो रहा है। नेताओं की सक्रियता और बैठकों की आवृत्ति यह स्पष्ट कर रही है कि अगले 48 से 72 घंटे बिहार की राजनीति के लिए बेहद अहम साबित होने वाले हैं।

नई दिल्ली और पटना के बीच राजनीतिक गतिविधियों का यह तालमेल भी अपने आप में खास है। हाल ही में राजधानी दिल्ली में भाजपा के शीर्ष नेतृत्व, जिनमें अमित शाह जैसे वरिष्ठ नेता शामिल थे, ने बिहार की मौजूदा स्थिति पर विस्तार से चर्चा की। इस बैठक के बाद पटना में भी हलचल तेज हो गई, जहां मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी पार्टी के नेताओं के साथ कई दौर की बैठकों का सिलसिला शुरू किया। इन बैठकों में न केवल वर्तमान राजनीतिक स्थिति का आकलन किया गया, बल्कि संभावित विकल्पों और रणनीतियों पर भी विचार-विमर्श हुआ।

इस बीच एक और महत्वपूर्ण घटनाक्रम ने राजनीतिक अटकलों को और बल दे दिया। जब नीतीश कुमार ने 1 अणे मार्ग स्थित अपने आधिकारिक मुख्यमंत्री आवास को खाली कर 7 सर्कुलर रोड स्थित आवास में शिफ्ट होना शुरू किया, तो यह केवल एक प्रशासनिक कदम नहीं माना गया। राजनीतिक हलकों में इसे सत्ता परिवर्तन के संकेत के रूप में देखा जाने लगा। इस कदम ने यह चर्चा तेज कर दी कि क्या मुख्यमंत्री जल्द ही इस्तीफा देने वाले हैं और क्या राज्य में नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू होने वाली है। इसी क्रम में सम्राट चौधरी की सक्रियता भी चर्चा का विषय बनी हुई है। उन्होंने लगातार दो दिनों में मुख्यमंत्री से मुलाकात की, जिससे यह संकेत मिला कि सरकार के भविष्य और नेतृत्व परिवर्तन को लेकर गंभीर बातचीत चल रही है। इन मुलाकातों के दौरान नए मुख्यमंत्री के चयन, मंत्रिमंडल के गठन और विभागों के बंटवारे जैसे अहम मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना जताई जा रही है। इसके अलावा राज्य के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा और अन्य वरिष्ठ नेताओं की बैठकें भी इस बात का संकेत दे रही हैं कि राजनीतिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। राजनीतिक गलियारों में यह भी चर्चा है कि मौजूदा सरकार की अंतिम कैबिनेट बैठक 13 अप्रैल को हो सकती है, जिसके बाद 14 अप्रैल को मुख्यमंत्री के इस्तीफे की संभावना है। यदि ऐसा होता है, तो इसके तुरंत बाद राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) विधायक दल की बैठक बुलाई जाएगी, जिसमें नए नेता का चयन किया जाएगा। इस पूरी प्रक्रिया को देखते हुए यह स्पष्ट है कि सत्ता परिवर्तन अब केवल संभावना नहीं, बल्कि एक संभावित वास्तविकता बन चुका है। इस पूरे घटनाक्रम के बीच विजय चौधरी का बयान भी काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उन्होंने संकेत दिया है कि राज्य में जल्द ही नई सरकार के गठन की प्रक्रिया शुरू हो सकती है और इसकी टाइमलाइन भी जल्द ही सार्वजनिक की जाएगी। उनके इस बयान से यह साफ हो गया है कि राजनीतिक अनिश्चितता ज्यादा दिनों तक नहीं रहने वाली और जल्द ही स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। हालांकि जब उनसे अगले मुख्यमंत्री के नाम के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि यह निर्णय भाजपा के हाथ में है, जो अपनी आंतरिक प्रक्रिया के तहत इस पर अंतिम मुहर लगाएगी।

बिहार की राजनीति में यह दौर केवल सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि राजनीतिक संतुलन और रणनीति का भी है। सभी दल अपने-अपने हितों को साधने की कोशिश में लगे हुए हैं और यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि नई व्यवस्था में उनकी भूमिका मजबूत बनी रहे। यही कारण है कि बैठकों का यह सिलसिला लगातार जारी है और हर स्तर पर विचार-विमर्श हो रहा है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि बिहार की राजनीति किस दिशा में जाती है और कौन सा चेहरा राज्य का नया नेतृत्व संभालता है। फिलहाल इतना तय है कि अगले कुछ दिन बिहार के लिए बेहद निर्णायक साबित होंगे और जो भी निर्णय लिए जाएंगे, उनका प्रभाव न केवल राज्य की राजनीति पर पड़ेगा, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी इसके दूरगामी परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

दर्शन के बहाने चोरी: सिद्धिविनायक गणेश मंदिर से सात चांदी के मुकुट पार, परिवार समेत आया आरोपी CCTV में कैद

कानपुर। आस्था के केंद्र माने जाने वाले मंदिर में चोरी की एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जिसने श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों को स्तब्ध कर दिया है। शहर के हरबंश मोहाल क्षेत्र स्थित Siddhivinayak Ganesh Temple में एक युवक ने अपनी पत्नी और छोटे बच्चे के साथ दर्शन के बहाने प्रवेश किया और भगवान की मूर्तियों से चांदी के सात मुकुट चोरी कर लिए। हैरानी की बात यह है कि यह पूरी घटना मंदिर परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों में साफ-साफ रिकॉर्ड हो गई है।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, यह वारदात शनिवार को उस समय हुई जब मंदिर के पुजारी अपने परिवार के साथ बाहर गए हुए थे। इसी दौरान हेलमेट पहने एक युवक अपनी पत्नी और बच्चे के साथ मंदिर पहुंचा। बाहर से देखने पर सब कुछ सामान्य लग रहा था, लेकिन अंदर जाते ही उसने मौके का फायदा उठाया और मंदिर में स्थापित आठ मूर्तियों में से सात के मुकुट उतारकर अपने साथ ले गया। चोरी किए गए इन मुकुटों का कुल वजन लगभग 600 ग्राम से लेकर एक किलोग्राम के बीच बताया जा रहा है, जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह चोरी पहले से योजना बनाकर की गई थी।

यह मंदिर, जो घंटाघर चौराहे के पास स्थित है, रोजाना सैकड़ों से हजारों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। ऐसे में इस तरह की घटना ने सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। देर रात जब मंदिर समिति के सदस्य सुरेंद्र सिंह वहां पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि कई मूर्तियों के सिर से मुकुट गायब हैं। इसके बाद तुरंत सीसीटीवी फुटेज की जांच की गई, जिसमें आरोपी युवक स्पष्ट रूप से मूर्तियों से मुकुट निकालते हुए दिखाई दिया। फुटेज में यह भी देखा गया कि उसकी पत्नी और बच्चा पास में मौजूद थे, जिससे यह संकेत मिलता है कि आरोपी ने परिवार का इस्तेमाल शक से बचने के लिए किया।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी गई। Ashutosh Kumar Singh ने बताया कि मंदिर प्रबंधन की तहरीर के आधार पर मामला दर्ज कर लिया गया है और आरोपी की पहचान के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। पुलिस ने चार विशेष टीमों का गठन किया है, जो आसपास के इलाकों में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही हैं, ताकि आरोपी के आने-जाने के रास्तों का पता लगाया जा सके।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि यह घटना केवल एक चोरी नहीं, बल्कि धार्मिक स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था में मौजूद खामियों को भी उजागर करती है। जिस तरह से आरोपी ने परिवार के साथ आकर इस वारदात को अंजाम दिया, वह यह दर्शाता है कि उसने पहले से पूरी योजना बनाई थी और उसे पता था कि कब और कैसे वारदात को अंजाम देना है।

स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं में इस घटना को लेकर भारी नाराजगी है। उनका कहना है कि मंदिर जैसे पवित्र स्थानों पर इस तरह की घटनाएं बेहद दुर्भाग्यपूर्ण हैं और प्रशासन को सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करना चाहिए। कई लोगों ने यह भी मांग की है कि मंदिरों में 24 घंटे सुरक्षा गार्ड की तैनाती और निगरानी व्यवस्था को और सख्त किया जाए। यह घटना एक चेतावनी भी है कि अपराधी अब पारंपरिक तरीकों से हटकर नए-नए तरीके अपना रहे हैं। परिवार के साथ आकर चोरी करना न केवल पुलिस को भ्रमित करने की कोशिश है, बल्कि यह समाज में गिरते नैतिक मूल्यों की भी झलक देता है। फिलहाल पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी है और उम्मीद जताई जा रही है कि जल्द ही उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या हमारे धार्मिक स्थल वास्तव में सुरक्षित हैं, या फिर आस्था के नाम पर भी अपराधियों को खुली छूट मिल रही है।

पूर्व सांसद हरिनारायण राजभर का निधन पूर्वांचल की राजनीति में शोक की लहर

लखनऊ। Harinarayan Rajbhar के निधन से उत्तर प्रदेश की राजनीति, खासकर पूर्वांचल क्षेत्र में गहरा शोक छा गया है। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और घोसी से पूर्व सांसद रहे राजभर ने रविवार को Max Hospital में अंतिम सांस ली। वह 76 वर्ष के थे। बताया जा रहा है कि उनकी तबीयत अचानक बिगड़ने के बाद शनिवार को उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां इलाज के दौरान उनका निधन हो गया।

उनके निधन की खबर मिलते ही राजनीतिक गलियारों में शोक की लहर दौड़ गई। प्रदेश सरकार में नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा अस्पताल पहुंचे और उन्होंने दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिजनों को ढांढस बंधाया। पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों में भी गहरा दुख देखा गया, क्योंकि हरिनारायण राजभर को जमीनी स्तर से जुड़े, सरल और कर्मठ नेता के रूप में जाना जाता था।

हरिनारायण राजभर पूर्वांचल की राजनीति में एक मजबूत पहचान रखते थे। उन्होंने अपने लंबे राजनीतिक जीवन में जनता के बीच रहकर काम किया और क्षेत्रीय मुद्दों को मजबूती से उठाया। वह एक बार सांसद रहे, इसके अलावा दो बार विधायक चुने गए और प्रदेश सरकार में मंत्री पद की जिम्मेदारी भी संभाली। उनके राजनीतिक जीवन की विशेषता यह रही कि उन्होंने संगठन और सरकार दोनों स्तरों पर सक्रिय भूमिका निभाई।

राजभर का राजनीतिक सफर उस दौर में शुरू हुआ जब भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश में अपनी जड़ें मजबूत कर रही थी। उन्होंने पार्टी के विस्तार में अहम योगदान दिया और ग्रामीण क्षेत्रों में संगठन को मजबूत बनाने के लिए लगातार काम किया। यही कारण रहा कि वे पूर्वांचल में भाजपा के भरोसेमंद चेहरों में गिने जाते थे।

उनके संबंध पार्टी के दिग्गज नेताओं से भी काफी करीबी रहे। वे पूर्व मुख्यमंत्री Kalyan Singh और Rajnath Singh के विश्वस्त सहयोगियों में शामिल थे। इन नेताओं के साथ काम करते हुए उन्होंने प्रशासनिक और संगठनात्मक अनुभव हासिल किया, जो उनके राजनीतिक जीवन में साफ तौर पर झलकता था। हरिनारायण राजभर को उनकी सादगी, स्पष्टवादिता और जनता के प्रति समर्पण के लिए याद किया जाएगा। उन्होंने हमेशा क्षेत्र के विकास, बुनियादी सुविधाओं और गरीब वर्ग के उत्थान को प्राथमिकता दी। उनके कार्यकाल में कई विकास कार्यों को गति मिली, जिसका लाभ आज भी क्षेत्र के लोगों को मिल रहा है।

उनके निधन से न केवल भाजपा, बल्कि पूरे राजनीतिक परिदृश्य में एक अनुभवी और जुझारू नेता की कमी महसूस की जा रही है। पूर्वांचल के कई जिलों में उनके समर्थकों और कार्यकर्ताओं ने शोक सभाएं आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि हरिनारायण राजभर जैसे नेताओं की भूमिका केवल चुनावी राजनीति तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे समाज और संगठन के बीच एक मजबूत कड़ी का काम करते हैं। उनके जाने से उस अनुभव और मार्गदर्शन का अभाव महसूस होगा, जो नई पीढ़ी के नेताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है।

फिलहाल, उनके पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शन के लिए उनके पैतृक स्थान ले जाने की तैयारी की जा रही है, जहां बड़ी संख्या में लोग उन्हें अंतिम विदाई देंगे। उनके निधन ने यह एक बार फिर याद दिलाया है कि राजनीति में ऐसे नेताओं का स्थान हमेशा विशेष होता है, जो सत्ता से अधिक सेवा को प्राथमिकता देते हैं।

सुरों की अमर विरासत को नमन, आशा भोसले के निधन पर देश शोकाकुल

भारतीय संगीत जगत के लिए एक अत्यंत दुखद क्षण तब आया, जब स्वर-साम्राज्ञी आशा भोसले का 92 वर्ष की आयु में मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में निधन हो गया। उनके जाने से न केवल फिल्म और संगीत जगत को अपूरणीय क्षति हुई है, बल्कि करोड़ों प्रशंसकों के दिलों में भी गहरा शोक छा गया है। दशकों तक अपनी मधुर और बहुआयामी आवाज से लोगों को मंत्रमुग्ध करने वाली इस महान गायिका का यूं अचानक चले जाना भारतीय सांस्कृतिक विरासत के एक स्वर्णिम अध्याय के अंत जैसा महसूस हो रहा है। उनके निधन की खबर मिलते ही पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि भारतीय संगीत जगत की स्वर-साम्राज्ञी, महान सुर-साधिका और 'पद्म विभूषण' से सम्मानित आशा भोसले का निधन अत्यंत दुःखद है और यह कला जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। मुख्यमंत्री ने उनके योगदान को याद करते हुए कहा कि उनकी अद्वितीय गायकी ने भारतीय संगीत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया और उनके मधुर स्वर सदैव देशवासियों के हृदय में गूंजते रहेंगे। उन्होंने भगवान श्री राम से प्रार्थना करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति और शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना की।

इसी क्रम में भारत सरकार के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि आशा भोसले का निधन उनके लिए अत्यंत पीड़ादायक है। उन्होंने यह भी कहा कि पार्श्व गायिका के रूप में आशा भोसले ने हजारों फिल्मों और संगीत एल्बम्स में अपनी आवाज दी, जिसे भारत की कई पीढ़ियों ने सुना, सराहा और गुनगुनाया। उनके सुमधुर गीतों की गूंज आने वाले समय में भी लोगों के दिलों में जीवित रहेगी। राजनाथ सिंह ने इसे संगीत जगत की एक अपूरणीय क्षति बताते हुए उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त कीं।

आशा भोसले केवल एक गायिका नहीं थीं, बल्कि वे भारतीय संगीत की जीवित परंपरा थीं, जिन्होंने हर दौर के संगीत को अपनी आवाज से सजाया। उन्होंने फिल्मी गीतों से लेकर ग़ज़ल, भजन, पॉप और लोक संगीत तक हर शैली में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उनकी आवाज में वह जादू था, जो हर भावना को जीवंत कर देता था—चाहे वह प्रेम हो, विरह हो, उल्लास हो या दर्द।

वे महान गायिका लता मंगेशकर की छोटी बहन थीं, लेकिन उन्होंने अपनी अलग पहचान और मुकाम खुद बनाया। जहां लता मंगेशकर को शास्त्रीय और गंभीर गीतों के लिए जाना जाता था, वहीं आशा भोसले ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हर प्रकार के गीतों में अपनी छाप छोड़ी। यही कारण है कि वे हर पीढ़ी की पसंद बनी रहीं और उनका संगीत समय की सीमाओं को पार करता रहा।

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य समेत कई अन्य मंत्रियों और नेताओं ने भी उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। सभी ने एक स्वर में स्वीकार किया कि आशा भोसले का जाना भारतीय संगीत जगत के लिए एक ऐसी क्षति है, जिसकी भरपाई संभव नहीं है।

आशा भोसले का जीवन संघर्ष, समर्पण और सफलता की एक प्रेरणादायक कहानी है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत बेहद कम उम्र में की और अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए अपने लिए एक अलग स्थान बनाया। उनकी मेहनत, लगन और संगीत के प्रति समर्पण ने उन्हें उस ऊंचाई तक पहुंचाया, जहां वे आज एक किंवदंती के रूप में याद की जाती हैं।

उनके द्वारा गाए गए अनगिनत गीत आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। चाहे पुराने फिल्मी गीत हों या नए दौर के प्रयोगात्मक संगीत, हर जगह उनकी आवाज ने एक अलग पहचान बनाई। उन्होंने न केवल भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय संगीत को पहचान दिलाई। आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तब भी उनकी आवाज, उनके गीत और उनका योगदान हमेशा जीवित रहेगा। वे भले ही इस दुनिया से विदा हो गई हों, लेकिन उनके सुर सदैव अमर रहेंगे और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे। यह क्षण पूरे देश के लिए शोक का है, लेकिन साथ ही यह उस महान कलाकार को याद करने और उनके योगदान को सम्मान देने का भी समय है, जिसने अपने जीवन को संगीत के लिए समर्पित कर दिया। आशा भोसले का नाम भारतीय संगीत इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा और उनकी विरासत हमेशा जीवित रहेगी। ओम शांति।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

मिर्जापुर अधिवक्ता हत्याकांड: 15 घंटे में पुलिस की बड़ी कार्रवाई, मुठभेड़ में मुख्य आरोपी गिरफ्तार

मिर्जापुर। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में दिनदहाड़े हुए सनसनीखेज अधिवक्ता हत्याकांड ने पूरे इलाके को दहला दिया, लेकिन पुलिस ने त्वरित और सख्त कार्रवाई करते हुए महज 15 घंटे के भीतर इस मामले का खुलासा कर दिया। कटरा कोतवाली क्षेत्र की सद्भावना नगर कॉलोनी में हुई इस हत्या के मुख्य आरोपी को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया, जिससे कानून-व्यवस्था को लेकर उठ रहे सवालों के बीच प्रशासन ने अपनी सक्रियता का संदेश देने की कोशिश की है।

घटना शनिवार सुबह करीब 7:15 बजे की है, जब 50 वर्षीय पूर्व ग्राम प्रधान और अधिवक्ता राजीव सिंह उर्फ रिंकू रोज की तरह मॉर्निंग वॉक के बाद अपने घर लौट रहे थे। कॉलोनी के पास उनकी मुलाकात आरोपी राजेंद्र सोनकर से हुई, जिसने पहले सामान्य तरीके से अभिवादन किया और वहां से आगे निकल गया। लेकिन यह महज एक छलावा था—कुछ ही देर बाद वह अपने एक साथी के साथ वापस लौटा और अचानक हमला कर दिया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आरोपी ने बाइक खड़ी की, तमंचा निकाला और बेहद नजदीक से राजीव सिंह के सीने में गोली मार दी। हमला इतना अचानक और घातक था कि अधिवक्ता को संभलने का मौका तक नहीं मिला और मौके पर ही उनकी मौत हो गई। इस घटना के बाद पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई और लोग दहशत में आ गए।

वारदात की सूचना मिलते ही पुलिस हरकत में आ गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल 50 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया और आरोपी की गिरफ्तारी के लिए पांच विशेष टीमें गठित की गईं। पुलिस ने तकनीकी सर्विलांस, मुखबिर तंत्र और लगातार दबिश के जरिए आरोपी की लोकेशन ट्रैक करना शुरू किया।

देर रात करीब 10:15 बजे पुलिस को सूचना मिली कि आरोपी कटरा कोतवाली क्षेत्र में पीएसी परिसर के पीछे स्थित पहाड़ी इलाके में छिपा हुआ है। इसके बाद पुलिस टीम ने इलाके को घेर लिया। खुद को घिरता देख आरोपी ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी, जिसके जवाब में पुलिस ने भी कार्रवाई की।

मुठभेड़ के दौरान पुलिस की जवाबी फायरिंग में आरोपी के दोनों पैरों में गोली लगी, जिससे वह घायल हो गया और मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने उसके पास से दो अवैध तमंचे बरामद किए हैं, जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह हथियारबंद और खतरनाक इरादे से लैस था।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, आरोपी राजेंद्र सोनकर कोई सामान्य अपराधी नहीं है। उसके खिलाफ पहले से ही आधा दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि मृतक और आरोपी के बीच पुराना विवाद था, जो इस हत्या की मुख्य वजह हो सकता है। हालांकि, पुलिस अभी भी इस मामले के हर पहलू की गहन जांच कर रही है ताकि साजिश की पूरी परतें खोली जा सकें।

मृतक राजीव सिंह उर्फ रिंकू विंध्याचल थाना क्षेत्र के देवरी गांव के मूल निवासी थे और वर्ष 2011 से सद्भावना नगर कॉलोनी में रह रहे थे। वह न केवल एक अधिवक्ता थे, बल्कि अपने क्षेत्र में एक सक्रिय सामाजिक और राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में भी जाने जाते थे। उनके अचानक और इस तरह से हुए निधन ने स्थानीय लोगों को गहरे सदमे में डाल दिया है।

घटना के बाद क्षेत्र में तनाव की स्थिति को देखते हुए प्रशासन ने अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया है, ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति को रोका जा सके। पुलिस लगातार इलाके में गश्त कर रही है और लोगों को आश्वस्त करने का प्रयास कर रही है कि स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। एएसपी सिटी नीतेश सिंह ने बताया कि यह कार्रवाई पुलिस की तत्परता और पेशेवर दक्षता का परिणाम है। उन्होंने कहा कि मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और अब उससे पूछताछ कर पूरे नेटवर्क और घटना के पीछे की असली वजह का पता लगाया जा रहा है।

पुलिस का यह भी कहना है कि इस मामले में अन्य संदिग्धों की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। इसलिए जांच का दायरा बढ़ाया गया है और जल्द ही पूरे घटनाक्रम का विस्तृत खुलासा किया जाएगा।

यह घटना एक बार फिर इस बात को उजागर करती है कि व्यक्तिगत रंजिश और आपराधिक प्रवृत्ति किस तरह समाज में हिंसा को जन्म देती है। हालांकि, पुलिस की त्वरित कार्रवाई ने यह भी दिखाया है कि कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रशासन पूरी तरह सतर्क और सक्रिय है।

मिर्जापुर का यह हत्याकांड अब केवल एक आपराधिक घटना नहीं रहा, बल्कि यह कानून-व्यवस्था, सुरक्षा और न्याय व्यवस्था की परीक्षा बन गया है। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि पुलिस जांच में और क्या खुलासे होते हैं और क्या इस मामले से जुड़े सभी आरोपियों को कानून के कटघरे में लाया जा सकेगा।

कफ सिरप तस्करी का बड़ा खुलासा: सोनभद्र में SIT की कार्रवाई, पिता-पुत्र गिरफ्तार, अंतरराज्यीय नेटवर्क बेनकाब

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में पुलिस की विशेष जांच टीम (SIT) ने एक बड़े ड्रग तस्करी नेटवर्क का पर्दाफाश करते हुए प्रयागराज के पिता-पुत्र को गिरफ्तार किया है। यह मामला साधारण अवैध कारोबार से कहीं अधिक गंभीर है, क्योंकि इसमें कोडीनयुक्त कफ सिरप जैसी प्रतिबंधित दवाओं को बड़े पैमाने पर देश के विभिन्न राज्यों से होते हुए अंतरराष्ट्रीय सीमा तक पहुंचाने का संगठित नेटवर्क सामने आया है।

जांच एजेंसियों के अनुसार, यह गिरोह लंबे समय से सक्रिय था और बेहद सुनियोजित तरीके से अपनी गतिविधियों को अंजाम दे रहा था। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान प्रयागराज के उदितगंज निवासी संस्कार वर्मा और उसके पिता विनोद कुमार के रूप में हुई है। दोनों पर आरोप है कि वे एक बड़े ड्रग माफिया नेटवर्क से जुड़े हुए थे और कोडीनयुक्त कफ सिरप की तस्करी में अहम भूमिका निभा रहे थे।

अपर पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार के मुताबिक, रॉबर्ट्सगंज थाने में दर्ज एक पुराने मामले की जांच के दौरान इस पूरे नेटवर्क का सुराग मिला। जब पुलिस ने गहराई से जांच की, तो यह स्पष्ट हुआ कि यह कोई स्थानीय स्तर का मामला नहीं, बल्कि एक व्यापक अंतरराज्यीय और संभावित अंतरराष्ट्रीय तस्करी रैकेट है।

इस नेटवर्क की कार्यप्रणाली बेहद चौंकाने वाली थी। आरोपी दिल्ली स्थित एक फर्म के माध्यम से बड़ी मात्रा में कोडीनयुक्त कफ सिरप की खेप हासिल करते थे। इसके बाद इन दवाओं को सीधे भेजने के बजाय एक बेहद चालाक तरीका अपनाया जाता था—इन्हें नमकीन, बिस्किट, चिप्स जैसे रोजमर्रा के खाद्य पदार्थों के बीच छिपाकर कंटेनरों में रखा जाता था।

तस्करी के दौरान संदेह से बचने के लिए फर्जी बिल और दस्तावेज भी तैयार किए जाते थे, जिससे यह सामान सामान्य व्यापारिक माल जैसा लगे। इस तरह यह अवैध खेप आसानी से एक राज्य से दूसरे राज्य में पहुंचा दी जाती थी।

जांच में यह भी सामने आया कि यह नेटवर्क उत्तर प्रदेश से शुरू होकर पूर्वोत्तर भारत के राज्यों, खासकर त्रिपुरा और अगरतला तक फैला हुआ था। वहां से इन दवाओं को अंतरराष्ट्रीय सीमा पार, विशेष रूप से बांग्लादेश तक पहुंचाने की आशंका जताई जा रही है। इस पूरे मामले का सबसे अहम सुराग 18 अक्टूबर 2025 को मिली एक बड़ी बरामदगी से जुड़ा है। उस दिन रॉबर्ट्सगंज क्षेत्र में पुलिस ने दो कंटेनरों को पकड़ा था, जिनसे कुल 1,19,675 शीशियां कोडीनयुक्त कफ सिरप बरामद हुई थीं। यह मात्रा अपने आप में इस नेटवर्क के बड़े पैमाने को दर्शाती है।

जांच में यह भी सामने आया कि इनमें से लगभग 59,675 शीशियां अवैध रूप से त्रिपुरा के रास्ते भेजी जा रही थीं। इसी बरामदगी के बाद पुलिस और एसआईटी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए इसकी तह तक जाने का निर्णय लिया। लगातार तकनीकी जांच, कॉल डिटेल्स और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों की पहचान की गई और अंततः उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

विशेषज्ञों का मानना है कि कोडीनयुक्त कफ सिरप का दुरुपयोग नशे के रूप में तेजी से बढ़ रहा है, खासकर युवाओं के बीच। यही वजह है कि इस तरह की दवाओं की तस्करी एक बड़े अवैध कारोबार का रूप ले चुकी है। यह न केवल कानून व्यवस्था के लिए चुनौती है, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि यह कार्रवाई केवल शुरुआत है। इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की पहचान की जा रही है और जल्द ही और गिरफ्तारियां हो सकती हैं। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि दिल्ली स्थित फर्म की भूमिका क्या थी और क्या वह भी इस अवैध गतिविधि में शामिल थी या नहीं।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि प्रतिबंधित दवाएं इतनी आसानी से बाजार में कैसे उपलब्ध हो रही हैं और उनका दुरुपयोग कैसे रोका जाए। प्रशासन अब इस दिशा में सख्त कदम उठाने की तैयारी में है, ताकि भविष्य में इस तरह के नेटवर्क पनप न सकें।

सोनभद्र में हुई यह कार्रवाई न केवल एक बड़ी सफलता है, बल्कि यह भी दिखाती है कि यदि जांच एजेंसियां सतर्क और सक्रिय रहें, तो बड़े से बड़े आपराधिक नेटवर्क का पर्दाफाश किया जा सकता है। अब सबकी नजर इस बात पर है कि जांच आगे क्या मोड़ लेती है और इस पूरे रैकेट के पीछे छिपे असली सरगनाओं तक पुलिस कब पहुंच पाती है।

भारत बनेगा ग्लोबल हब: BSH Home Appliances का 2030 तक 8% मार्केट शेयर का बड़ा लक्ष्य

बेंगलुरु। घरेलू उपकरण क्षेत्र में तेजी से उभरते भारतीय बाजार को लेकर वैश्विक कंपनियों की दिलचस्पी लगातार बढ़ रही है। इसी कड़ी में जर्मनी की दिग्गज कंपनी BSH Home Appliances ने भारत में अपने विस्तार को लेकर महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है। कंपनी ने वर्ष 2030 तक भारतीय बाजार में करीब 8 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करने का लक्ष्य रखा है, जो उसके दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

कंपनी के भारत के एमडी और सीईओ सैफ खान के अनुसार, यह लक्ष्य केवल बिक्री बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक व्यापक रणनीति है। इसमें प्रोडक्ट पोर्टफोलियो का विस्तार, रिटेल नेटवर्क को मजबूत करना और तेजी से बढ़ते प्रीमियम एवं स्मार्ट अप्लायंसेज सेगमेंट में निवेश शामिल है।

भारत का घरेलू उपकरण बाजार पिछले कुछ वर्षों में तेजी से विकसित हुआ है। बढ़ती आय, शहरीकरण और उपभोक्ताओं की बदलती जीवनशैली ने इस क्षेत्र को नई गति दी है। ऐसे में BSH जैसी कंपनियां भारत को केवल एक बाजार नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक निवेश केंद्र के रूप में देख रही हैं।

कंपनी के प्रदर्शन पर नजर डालें तो 2025 में BSH ने भारत में 15 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की। वहीं, 2026 की पहली तिमाही में कंपनी ने 50 प्रतिशत से अधिक की ग्रोथ हासिल कर उद्योग जगत को चौंका दिया। यह आंकड़े इस बात का संकेत हैं कि कंपनी की रणनीति सही दिशा में आगे बढ़ रही है और भारतीय उपभोक्ताओं के बीच उसके उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है।

BSH का फोकस केवल बिक्री तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भारत को एक मजबूत मैन्युफैक्चरिंग और इनोवेशन हब बनाने की दिशा में भी काम कर रही है। कंपनी देश में मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स, रिसर्च एंड डेवलपमेंट (R&D) और डिजाइन सेंटर में लगातार निवेश बढ़ा रही है। इसका उद्देश्य भारत को कम लागत वाले उत्पादन केंद्र के साथ-साथ वैश्विक नवाचार केंद्र के रूप में विकसित करना है।

इस रणनीति का सबसे अहम हिस्सा "लोकलाइजेशन" है। कंपनी ने 2030 तक 90 प्रतिशत लोकलाइजेशन हासिल करने का लक्ष्य रखा है। इसका मतलब है कि उसके अधिकांश उत्पाद भारत में ही डिजाइन और निर्मित किए जाएंगे। इससे न केवल उत्पादन लागत कम होगी, बल्कि स्थानीय सप्लाई चेन को भी मजबूती मिलेगी और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।

विशेषज्ञों का मानना है कि "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसी पहलें विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश के लिए आकर्षित कर रही हैं। BSH का यह कदम भी इसी दिशा में एक बड़ा उदाहरण है, जहां एक वैश्विक कंपनी भारत को अपने भविष्य के केंद्र के रूप में देख रही है।

सैफ खान ने यह भी संकेत दिया कि 2026 कंपनी के लिए बेहद सकारात्मक वर्ष रहने वाला है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस साल कंपनी का राजस्व 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ सकता है। यह अनुमान दर्शाता है कि कंपनी को भारतीय बाजार की क्षमता पर पूरा भरोसा है।

BSH के इस आक्रामक विस्तार से भारतीय घरेलू उपकरण बाजार में प्रतिस्पर्धा और तेज होने की संभावना है। इससे उपभोक्ताओं को बेहतर तकनीक, अधिक विकल्प और प्रतिस्पर्धी कीमतों का लाभ मिल सकता है।

कुल मिलाकर, BSH का 2030 तक 8 प्रतिशत मार्केट शेयर हासिल करने का लक्ष्य केवल एक कारोबारी योजना नहीं, बल्कि भारत को वैश्विक मैन्युफैक्चरिंग और इनोवेशन हब बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। आने वाले वर्षों में यह देखना दिलचस्प होगा कि कंपनी अपने इस लक्ष्य को किस हद तक हासिल कर पाती है और भारतीय बाजार में किस तरह अपनी स्थिति मजबूत करती है।

शेयर बाजार में उछाल: टॉप 10 कंपनियों के मार्केट कैप में 4.13 लाख करोड़ की जबरदस्त बढ़ोतरी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में बीते कारोबारी सप्ताह के दौरान आई मजबूती ने देश की दिग्गज कंपनियों को बड़ा फायदा पहुंचाया है। निवेशकों की मजबूत खरीदारी, सकारात्मक वैश्विक संकेतों और बैंकिंग-फाइनेंशियल सेक्टर में आई तेजी के चलते भारत की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों के संयुक्त बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में 4.13 लाख करोड़ रुपये से अधिक का इजाफा दर्ज किया गया। यह उछाल न केवल बाजार के भरोसे को दर्शाता है, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती और निवेशकों के बढ़ते विश्वास का भी संकेत देता है।

इस तेजी में सबसे बड़ा योगदान निजी क्षेत्र के दिग्गज बैंक HDFC Bank का रहा, जिसने मार्केट कैप में सबसे अधिक बढ़ोतरी दर्ज की। इसके बाद ICICI Bank दूसरे स्थान पर रहा। बैंकिंग सेक्टर में आई इस मजबूती ने पूरे बाजार को सहारा दिया और निवेशकों को आकर्षित किया।

बीते सप्ताह जिन आठ कंपनियों के मार्केट कैप में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, उनमें HDFC Bank, ICICI Bank, Bajaj Finance, Larsen & Toubro, Bharti Airtel, State Bank of India, Tata Consultancy Services और Hindustan Unilever शामिल हैं। इन कंपनियों के संयुक्त मार्केट कैप में

कुल 4,13,003.23 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई, जो बाजार की मजबूती को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

हालांकि, इस तेजी के बीच दो कंपनियां ऐसी भी रहीं, जिनके मार्केट कैप में गिरावट देखी गई। आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनी Infosys को सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा, जबकि देश की सबसे बड़ी कंपनी Reliance Industries दूसरे स्थान पर रही। दोनों कंपनियों के कुल मार्केट कैप में मिलाकर 4,232.31 करोड़ रुपये की गिरावट दर्ज की गई। यह गिरावट बाजार में सेक्टर-विशिष्ट दबाव और निवेशकों की रणनीतिक बिकवाली का परिणाम मानी जा रही है।

मार्केट कैप के आधार पर कंपनियों की रैंकिंग में Reliance Industries 18.27 लाख करोड़ रुपये के साथ देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी हुई है। इसके बाद HDFC Bank, Bharti Airtel, State Bank of India, ICICI Bank, Tata Consultancy Services, Bajaj Finance, Larsen & Toubro, Infosys और Hindustan Unilever का स्थान रहा।

विश्लेषकों के अनुसार, इस तेजी के पीछे कई प्रमुख कारण हैं। सबसे पहले, बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं से जुड़ी कंपनियों के बेहतर प्रदर्शन ने निवेशकों का भरोसा बढ़ाया है। इसके अलावा, वैश्विक बाजारों से मिले सकारात्मक संकेत, कच्चे तेल की कीमतों में स्थिरता और घरेलू आर्थिक आंकड़ों की मजबूती ने भी बाजार को सहारा दिया है। विदेशी निवेशकों की वापसी और घरेलू संस्थागत निवेशकों की सक्रिय भागीदारी ने भी बाजार में लिक्विडिटी बढ़ाई है।

विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि इंफ्रास्ट्रक्चर और टेलीकॉम सेक्टर में जारी निवेश और विस्तार योजनाओं का असर भी इन कंपनियों के मार्केट कैप में दिखा है। Larsen & Toubro और Bharti Airtel जैसी कंपनियों में आई तेजी इस बात का संकेत है कि निवेशक लंबे समय के विकास की संभावनाओं को ध्यान में रखकर निवेश कर रहे हैं।

हालांकि, आईटी सेक्टर में कुछ दबाव देखने को मिला है, जिसका असर Infosys जैसी कंपनियों पर पड़ा। वैश्विक मांग में अनिश्चितता और तकनीकी खर्च में संभावित कटौती की आशंका ने इस सेक्टर को प्रभावित किया है।

कुल मिलाकर, बीता सप्ताह भारतीय शेयर बाजार के लिए सकारात्मक रहा है। टॉप कंपनियों के मार्केट कैप में आई यह भारी बढ़ोतरी इस बात का संकेत है कि निवेशकों का भरोसा मजबूत बना हुआ है और भारतीय बाजार वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद स्थिरता की ओर बढ़ रहा है।

आने वाले समय में निवेशकों की नजरें महंगाई के आंकड़ों, ब्याज दरों के फैसलों और वैश्विक घटनाक्रमों पर टिकी रहेंगी। यदि ये कारक अनुकूल रहते हैं, तो बाजार में यह तेजी आगे भी जारी रह सकती है।

सुरों की छाया में जीवन: मां Asha Bhosle के साए की तरह साथ रहे Anand Bhosle, जानिए उनकी जिंदगी का अनकहा सफर

भारतीय संगीत जगत की अमर आवाज, सुरों की मल्लिका Asha Bhosle के निधन ने पूरे देश को शोक में डुबो दिया है। 92 वर्ष की आयु में उन्होंने मुंबई के Breach Candy Hospital में अंतिम सांस ली और अपने पीछे एक ऐसा संगीत संसार छोड़ गईं, जिसकी गूंज आने वाली पीढ़ियों तक सुनाई देती रहेगी। इस कठिन समय में जहां लाखों प्रशंसक उन्हें याद कर रहे हैं, वहीं सबसे गहरा आघात उनके परिवार—खासतौर पर उनके छोटे बेटे Anand Bhosle—पर पड़ा है, जो जीवन भर उनकी परछाई की तरह उनके साथ खड़े रहे।

आनंद भोसले केवल एक बेटे नहीं थे, बल्कि अपनी मां के जीवन के हर महत्वपूर्ण पहलू के साथी, सहयोगी और संरक्षक भी थे। जहां Asha Bhosle ने मंच पर अपनी आवाज से दुनिया को मंत्रमुग्ध किया, वहीं पर्दे के पीछे उनकी पूरी दुनिया को व्यवस्थित और सुचारु रूप से चलाने का जिम्मा आनंद ने अपने कंधों पर उठाया हुआ था। वे उन दुर्लभ लोगों में शामिल रहे, जिन्होंने प्रसिद्धि के केंद्र में रहते हुए भी खुद को हमेशा उससे दूर रखा।

आनंद भोसले का जीवन एक तरह से त्याग, समर्पण और संतुलन की मिसाल है। उन्होंने बिजनेस और फिल्म निर्देशन की पढ़ाई की, जिससे उन्हें प्रबंधन और रचनात्मकता दोनों का गहरा अनुभव मिला। यही कारण था कि उन्होंने अपनी मां के अंतरराष्ट्रीय कॉन्सर्ट, वर्ल्ड टूर, म्यूजिक प्रोजेक्ट्स और अन्य पेशेवर गतिविधियों को बेहद कुशलता से संभाला। चाहे दुबई में आयोजित भव्य कार्यक्रम हो या यूरोप-अमेरिका में होने वाले कॉन्सर्ट—हर जगह की योजना, प्रबंधन और निष्पादन में उनकी भूमिका बेहद अहम होती थी। लेकिन इस पूरे सफर की सबसे खास बात यह रही कि आनंद ने कभी भी खुद को लाइमलाइट में लाने की कोशिश नहीं की। जहां आज के दौर में लोग थोड़ी सी पहचान के लिए भी सोशल मीडिया और मीडिया के सामने आने को तैयार रहते हैं, वहीं आनंद ने हमेशा सादगी और निजी जीवन को प्राथमिकता दी। वे जानते थे कि उनकी असली पहचान उनकी मां की सफलता और उनके काम की सुचारु व्यवस्था में है, न कि सार्वजनिक प्रसिद्धि में। परिवार की बात करें तो आनंद भोसले का जीवन बेहद संतुलित और पारिवारिक मूल्यों से जुड़ा हुआ है। वे मुंबई में अपनी मां के साथ रहते थे और अंतिम समय तक उनका पूरा ख्याल रखते रहे। उनके बड़े भाई हेमंत भोसले दुबई में रहते हैं, लेकिन आनंद ने मुंबई में रहकर मां के साथ एक मजबूत भावनात्मक रिश्ता बनाए रखा। यह रिश्ता केवल जिम्मेदारी का नहीं, बल्कि गहरे प्रेम, सम्मान और समझ का प्रतीक था।

आनंद के अपने परिवार में भी संगीत की परंपरा जीवित है। उनकी बेटी जनाई भोसले अपनी दादी Asha Bhosle की तरह गायन और मॉडलिंग से जुड़ी हुई हैं। जनाई की आवाज में भी वही मिठास और आधुनिकता का मिश्रण देखने को मिलता है, जो आशा भोसले की पहचान रहा है। वहीं उनके बेटे रंजय भोसले भी अपने क्षेत्र में सक्रिय हैं और परिवार की विरासत को आगे बढ़ाने की दिशा में प्रयासरत हैं।

Asha Bhosle का जीवन जितना संघर्षपूर्ण और प्रेरणादायक रहा, उतना ही मजबूत सहारा उन्हें अपने परिवार से मिला, जिसमें आनंद की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही। जब एक कलाकार अपने करियर के शिखर पर होता है, तब उसे सिर्फ प्रशंसा ही नहीं, बल्कि सही मार्गदर्शन और संतुलन की भी जरूरत होती है। आनंद ने यह भूमिका बखूबी निभाई। उन्होंने अपनी मां को हर उस तनाव से दूर रखा, जो एक बड़े कलाकार के जीवन का हिस्सा बन सकता है।

आशा भोसले का करियर आठ दशकों से भी अधिक लंबा रहा, जिसमें उन्होंने 12,000 से ज्यादा गाने गाए और लगभग 20 भाषाओं में अपनी आवाज दी। इतने लंबे और विविधतापूर्ण करियर को संभालना आसान नहीं होता, लेकिन आनंद जैसे भरोसेमंद और समर्पित साथी के कारण यह संभव हो सका। वे न केवल एक मैनेजर थे, बल्कि एक सलाहकार, एक मित्र और सबसे बढ़कर एक बेटे थे, जिन्होंने हर परिस्थिति में अपनी मां का साथ दिया।

आज जब Asha Bhosle इस दुनिया में नहीं हैं, तो उनके पीछे छोड़ी गई विरासत को संभालने की जिम्मेदारी भी कहीं न कहीं आनंद के कंधों पर ही आती है। यह केवल संगीत की विरासत नहीं है, बल्कि एक ऐसी सांस्कृतिक धरोहर है, जो भारत की पहचान का हिस्सा बन चुकी है।

उनका अंतिम संस्कार मुंबई के Shivaji Park में पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा, जहां हजारों प्रशंसक और फिल्म जगत की हस्तियां उन्हें अंतिम विदाई देने पहुंचेंगी। लेकिन इस भीड़ और श्रद्धांजलि के बीच एक सन्नाटा भी होगा—एक बेटे के दिल का सन्नाटा, जिसने अपनी जिंदगी का सबसे बड़ा सहारा खो दिया है। आनंद भोसले की कहानी हमें यह सिखाती है कि महानता केवल मंच पर खड़े होकर तालियां बटोरने में नहीं होती, बल्कि उन लोगों में भी होती है जो पर्दे के पीछे रहकर उस मंच को संभव बनाते हैं। वे उन अनसुने नायकों में से एक हैं, जिनकी वजह से एक महान कलाकार अपनी कला को दुनिया तक पहुंचा पाता है।

आज जब पूरा देश Asha Bhosle को याद कर रहा है, तो यह भी जरूरी है कि हम उन लोगों को याद करें, जिन्होंने उनके सफर को संभव बनाया। आनंद भोसले उन्हीं में से एक हैं—एक ऐसा नाम जो भले ही सुर्खियों में कम रहा हो, लेकिन जिसकी भूमिका अमूल्य और अविस्मरणीय है। आने वाले समय में भले ही मंच पर आशा भोसले की आवाज सुनाई न दे, लेकिन उनकी यादें, उनके गीत और उनके साथ खड़े रहे लोगों की कहानियां हमेशा जीवित रहेंगी। और इन कहानियों में आनंद भोसले का नाम हमेशा एक सच्चे साथी, समर्पित बेटे और मौन शक्ति के रूप में दर्ज रहेगा।

RNI No.: UPHIN/25/A1698 Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh. and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : VINOD KUMARI
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com* navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

एनएच-31 पर रफ्तार का कहर: कटिहार में भीषण सड़क हादसे में 13 की मौत, मातम में डूबा सीमांचल

कटिहार। बिहार के Katihar जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग-31 पर शनिवार देर रात हुआ एक भीषण सड़क हादसा पूरे सीमांचल क्षेत्र के लिए एक दर्दनाक त्रासदी बनकर सामने आया है। तेज रफ्तार और लापरवाही की कीमत इस बार 13 जिंदगियों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी, जबकि 30 से अधिक लोग घायल होकर अस्पतालों में जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहे हैं। मृतकों में 10 महिलाएं, दो पुरुष और एक मासूम बच्ची शामिल हैं, जिससे इस हादसे की भयावहता और भी बढ़ जाती है। यह दुर्घटना केवल एक सड़क हादसा नहीं, बल्कि कई परिवारों के सपनों, उम्मीदों और जीवन की पूरी दुनिया के उजड़ जाने की कहानी बन गई है।

यह दर्दनाक हादसा NH-31 पर कोढ़ा प्रखंड के बसगड़ा चौक के समीप उस समय हुआ, जब हरदा से पूर्णिया की ओर जा रही एक तेज रफ्तार बस अचानक अनियंत्रित हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बस की गति इतनी अधिक थी कि चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख सका। पहले बस ने सड़क पर जा रहे दो बाइक सवारों को जोरदार टक्कर मारी, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बाद बस का संतुलन पूरी तरह बिगड़ गया और सामने से आ रही यात्रियों से भरी पिकअप वाहन से सीधी भिड़ंत हो गई।

टक्कर इतनी भीषण थी कि मौके पर ही कई लोगों की मौत हो गई। सड़क पर चारों ओर चीख-पुकार मच गई, लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। हादसे के बाद का दृश्य इतना भयावह था कि जिसने भी देखा, उसकी रूह कांप उठी। टूटी हुई गाड़ियां, सड़क पर बिखरे सामान, घायल लोगों की कराह और परिजनों की चीखें—यह सब कुछ किसी भयानक मंजर से कम नहीं था।

बताया जा रहा है कि पिकअप वाहन में सवार अधिकांश लोग झारखंड से एक धार्मिक कार्यक्रम में शामिल होकर लौट रहे थे। वे अपने घर वापस जा रहे थे, लेकिन रास्ते में ही यह दर्दनाक हादसा उनकी जिंदगी का अंतिम सफर बन गया। मृतकों में 11 लोग Purnia जिले के निवासी थे, जबकि 2 लोग कटिहार के ही थे। इस हादसे ने दोनों जिलों में शोक की लहर फैला दी है। प्रत्यक्षदर्शियों ने यह भी बताया कि बस चालक के नशे में होने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि, प्रशासन ने अभी इसकी पुष्टि नहीं की है, लेकिन शुरुआती जांच में तेज रफ्तार और लापरवाही को दुर्घटना का मुख्य कारण माना जा रहा है। यदि चालक के नशे में होने की बात सही पाई जाती है, तो यह हादसा और भी गंभीर लापरवाही का मामला बन जाएगा।

हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोगों ने राहत और बचाव कार्य शुरू किया। ग्रामीणों ने अपनी जान जोखिम में डालकर घायलों को बाहर निकाला और उन्हें अस्पताल पहुंचाने में मदद की। कुछ ही देर में पुलिस और प्रशासन की टीम भी मौके पर पहुंच गई और बचाव कार्य को तेज किया गया। घायलों को पहले नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां से गंभीर रूप से घायल 8 लोगों को Government Medical College and Hospital रेफर कर दिया गया।

डॉक्टरों के अनुसार, कई घायलों की हालत नाजुक बनी हुई है और उन्हें बचाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। अस्पताल में परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। कोई अपने पिता को खोज रहा है, तो कोई अपनी मां या बच्चे को। इस हादसे ने न जाने कितने घरों के चिराग बुझा दिए हैं।

इस घटना की जानकारी मिलते ही प्रशासनिक अधिकारी भी सक्रिय हो गए। जिलाधिकारी Ashutosh Dwivedi ने मृतकों के परिजनों को मुख्यमंत्री राहत कोष से 2-2 लाख रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की है। हालांकि, यह आर्थिक मदद उन परिवारों के दर्द को कम नहीं कर सकती, जिन्होंने अपने प्रियजनों को हमेशा के लिए खो दिया। पुलिस अधीक्षक Shikhar Chaudhary ने बताया कि इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और हादसे की विस्तृत जांच की जा रही है। बस चालक भी इस दुर्घटना में घायल हुआ है और फिलहाल अस्पताल में भर्ती है। जैसे ही उसकी हालत स्थिर होगी, उससे पूछताछ की जाएगी। पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि क्या चालक नशे में था या वाहन में कोई तकनीकी खराबी थी।

यह हादसा एक बार फिर देश में सड़क सुरक्षा की गंभीर स्थिति को उजागर करता है। राष्ट्रीय राजमार्गों पर तेज रफ्तार, लापरवाही और नियमों की अनदेखी हर साल हजारों लोगों की जान ले रही है। इसके बावजूद न तो लोग सावधान हो रहे हैं और न ही नियमों का सख्ती से पालन कराया जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि सड़क हादसों को रोकने के लिए केवल कानून बनाना ही काफी नहीं है, बल्कि उनका सख्ती से पालन कराना भी उतना ही जरूरी है। ड्राइवरों की नियमित जांच, नशे में वाहन चलाने पर कड़ी सजा और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। साथ ही, वाहनों की फिटनेस और सड़क की स्थिति पर भी ध्यान देना जरूरी है।

कटिहार का यह हादसा केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह उन 13 परिवारों की दर्दनाक कहानी है, जिनकी दुनिया एक पल में उजड़ गई। यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर कब तक सड़कें यूं ही खून से लाल होती रहेंगी और निर्दोष लोग अपनी जान गंवाते रहेंगे।

फिलहाल पूरे क्षेत्र में शोक का माहौल है। गांव-गांव में मातम पसरा हुआ है, हर घर में सन्नाटा है। लोग एक-दूसरे को ढांढस बंधा रहे हैं, लेकिन इस दर्द को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। प्रशासन जांच में जुटा है, लेकिन असली सवाल यही है कि क्या इस हादसे से कोई सबक लिया जाएगा या फिर यह भी अन्य हादसों की तरह समय के साथ भुला दिया जाएगा।

कानपुर में दर्दनाक हादसा: कोचिंग को लेकर मां की डांट से आहत छात्रा ने जहर पीकर दी जान

कानपुर। उत्तर प्रदेश के औद्योगिक शहर कानपुर से एक बेहद ही संवेदनशील और झकझोर देने वाली घटना सामने आई है, जिसने न केवल एक परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है, बल्कि समाज के सामने भी कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। Kanpur के रेल बाजार थाना क्षेत्र स्थित लोको कॉलोनी में एक 14 वर्षीय छात्रा ने महज मां की डांट से आहत होकर ऐसा खौफनाक कदम उठा लिया, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। कोचिंग जाने को लेकर हुए मामूली विवाद के बाद छात्रा ने मच्छर मारने की जहरीली दवा पी ली, जिससे उसकी मौत हो गई।

घटना शनिवार शाम करीब 5 बजे की बताई जा रही है। जानकारी के अनुसार, मृतक छात्रा आर्या कक्षा 9 की छात्रा थी और पढ़ाई में सामान्य रूप से सक्रिय मानी जाती थी। उसके पिता शैलेंद्र शुक्ला Indian Railways में सीनियर टेक्नीशियन के पद पर कार्यरत हैं। परिवार में माता-पिता के अलावा एक छोटा भाई भी है। यह एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार था, जहां बच्चों की पढ़ाई और भविष्य को लेकर स्वाभाविक रूप से अपेक्षाएं थीं।

परिजनों के मुताबिक, शनिवार को जब आर्या से उसकी मां ने कोचिंग जाने के बारे में पूछा, तो उसने किसी कारणवश मना कर दिया। इस बात पर मां ने उसे डांट दिया, जो एक आम पारिवारिक स्थिति मानी जा सकती है। लेकिन इस छोटी-सी डांट ने आर्या को अंदर तक झकझोर दिया। गुस्से और भावनात्मक आवेश में वह अपने कमरे में चली गई। कुछ समय तक जब वह बाहर नहीं आई, तो मां को चिंता हुई। जब उन्होंने कमरे में जाकर देखा, तो उनकी दुनिया ही उजड़ गई—आर्या बेड पर अचेत अवस्था में पड़ी थी और पास में मच्छर मारने वाली दवा की खाली शीशी पड़ी हुई थी। यह दृश्य देखकर मां के पैरों तले जमीन खिसक गई। परिवार के लोग तुरंत उसे लेकर अस्पताल भागे।

उसे तत्काल लाला लाजपत राय अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल में यह खबर सुनते ही परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल है। उन्हें यकीन ही नहीं हो रहा कि उनकी बेटी अब इस दुनिया में नहीं रही।

घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार, प्रारंभिक जांच में यह मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है, जिसमें छात्रा मां की डांट से आहत होकर यह कदम उठा बैठी। हालांकि, पुलिस ने कहा है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो पाएगी। यह घटना केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं है, बल्कि समाज के लिए भी एक गंभीर चेतावनी है। आज के समय में बच्चों पर पढ़ाई, प्रतियोगिता और अपेक्षाओं का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। कई बार माता-पिता अनजाने में बच्चों पर इतना मानसिक दबाव डाल देते हैं कि वे उसे सहन नहीं कर पाते। किशोरावस्था एक बेहद संवेदनशील दौर होता है, जहां भावनाएं बहुत तीव्र होती हैं और छोटे-छोटे घटनाक्रम भी गहरा असर छोड़ सकते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस उम्र में बच्चों के साथ संवाद बेहद जरूरी है। केवल अनुशासन और डांट-फटकार के बजाय उनके मन की स्थिति को समझना, उनकी भावनाओं को महत्व देना और उन्हें खुलकर अपनी बात कहने का अवसर देना जरूरी होता है। यदि बच्चे को यह महसूस हो कि उसके माता-पिता उसकी बात समझते हैं, तो वह किसी भी समस्या का समाधान ढूंढने में अधिक सक्षम होता है।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या हम अपने बच्चों को केवल अंक और उपलब्धियों के आधार पर आंक रहे हैं? क्या हम उनके मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्थिति पर उतना ध्यान दे रहे हैं, जितना देना चाहिए?

समाजशास्त्रियों के अनुसार, बदलती जीवनशैली, डिजिटल प्रभाव और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बच्चों के सामने चुनौतियां पहले से कहीं अधिक बढ़ गई हैं। ऐसे में परिवार, स्कूल और समाज—तीनों की जिम्मेदारी है कि बच्चों को एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान किया जाए।

गंगा में दर्दनाक हादसा: बदायूं में नहाने गए 5 बच्चे डूबे, 1 की मौत; दो सगे भाइयों की तलाश जारी

बदायूं। उत्तर प्रदेश के Badaun जिले में रविवार को एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई, जिसने पूरे इलाके को शोक और चिंता में डाल दिया। उसहैत थाना क्षेत्र के खजुरा पुख्ता गांव के पास Ganga River में नहाने गए पांच मासूम बच्चे अचानक गहरे पानी और तेज बहाव की चपेट में आ गए। इस हादसे में एक बच्चे की दर्दनाक मौत हो गई, दो बच्चों को ग्रामीणों ने बहादुरी दिखाते हुए बचा लिया, जबकि दो सगे भाइयों का देर शाम तक कोई पता नहीं चल सका। प्रशासन द्वारा सर्च ऑपरेशन लगातार जारी है।

रविवार दोपहर करीब 3:30 बजे गांव के पांच बच्चे—केशव (11), पिंटू (9), सिंकू (13), अखिलेश (8) और विकास (11)—खेलते-खेलते नदी किनारे पहुंच गए। गर्मी के चलते उन्होंने नदी में स्नान करने का फैसला किया। शुरुआत में सब कुछ सामान्य था और बच्चे किनारे के पास ही पानी में खेल रहे थे, लेकिन अचानक स्थिति तब बिगड़ गई जब पिंटू का पैर गहराई में बने गड्ढे में चला गया और वह संतुलन खोकर तेज बहाव में बहने लगा।

अपने भाई को डूबता देख केशव तुरंत उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन वह खुद भी धारा में फंस गया। इसी बीच सिंकू भी मदद के लिए कूदा, मगर वह भी पानी के तेज बहाव में बहने लगा। देखते ही देखते स्थिति और भयावह हो गई जब बाकी दो बच्चे—विकास और अखिलेश—भी अपने दोस्तों को बचाने के लिए नदी में कूद पड़े। कुछ ही पलों में पांचों बच्चे लहरों के बीच संघर्ष करते नजर आए और उनकी चीख-पुकार से आसपास हड़कंप मच गया।

बच्चों की आवाज सुनकर खेतों में काम कर रहे ग्रामीण दौड़ते हुए मौके पर पहुंचे और बिना देर किए बचाव कार्य शुरू कर दिया। करीब 15 मिनट की कड़ी मशक्कत के बाद ग्रामीणों ने सिंकू और विकास को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। दोनों बच्चों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। हालांकि, अखिलेश को जब तक बाहर निकाला गया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मासूम की मौत की खबर सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया और पूरे गांव में मातम छा गया।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे। जिला प्रशासन ने तुरंत गोताखोरों की मदद से सर्च ऑपरेशन शुरू कराया। लापता बच्चों—केशव और पिंटू—की तलाश देर शाम तक जारी रही, लेकिन उनका कोई सुराग नहीं मिल सका। दोनों सगे भाई बताए जा रहे हैं, जिससे परिवार की पीड़ा और भी गहरी हो गई है।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए National Disaster Response Force (एनडीआरएफ) को भी अलर्ट कर दिया गया है, ताकि खोज अभियान को और तेज किया जा सके। अधिकारियों का कहना है कि नदी में तेज बहाव, गहराई और तलहटी में बने गड्ढों के कारण रेस्क्यू ऑपरेशन में काफी दिक्कतें आ रही हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जिस स्थान पर बच्चे नहा रहे थे, वहां पानी की गहराई अचानक बढ़ जाती है और नीचे गड्ढे बने हुए हैं, जो बाहर से दिखाई नहीं देते। यही वजह रही कि बच्चे अचानक संतुलन खो बैठे और हादसे का शिकार हो गए।

घटना के बाद जिला अधिकारी Avneesh Kumar Rai और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक Ankita Sharma ने मौके पर पहुंचकर हालात का जायजा लिया। अधिकारियों ने पीड़ित परिवारों को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया है और सर्च ऑपरेशन को तेज करने के निर्देश दिए हैं।

इस हादसे ने एक बार फिर नदी किनारे सुरक्षा व्यवस्था और जागरूकता की कमी को उजागर कर दिया है। गर्मियों के मौसम में अक्सर बच्चे और युवक नदियों, तालाबों में नहाने चले जाते हैं, लेकिन बिना सुरक्षा उपायों और जानकारी के यह बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि नदी में नहाते समय हमेशा सतर्क रहना चाहिए और बच्चों को अकेले पानी में जाने से रोकना चाहिए। खजुरा पुख्ता गांव में इस घटना के बाद सन्नाटा पसरा हुआ है। जहां एक ओर एक मासूम की मौत का दुख है, वहीं दूसरी ओर दो बच्चों की तलाश में परिजनों की आंखें टिकी हुई हैं। हर गुजरता पल उनके लिए बेचैनी और उम्मीद के बीच झूलता जा रहा है। फिलहाल प्रशासन पूरी ताकत के साथ लापता बच्चों की तलाश में जुटा है। गांव के लोग भी लगातार नदी किनारे डटे हुए हैं, उम्मीद में कि शायद कोई चमत्कार हो जाए और दोनों बच्चे सुरक्षित मिल जाएं।

बलरामपुर में 22 हाथियों का आतंक: रेड अलर्ट जारी, गांवों में दहशत का माहौल

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ के Balrampur जिले के रामानुजगंज वन परिक्षेत्र में इन दिनों जंगल और गांव के बीच की दूरी मानो खत्म होती नजर आ रही है। वजह है 22 हाथियों का एक बड़ा झुंड, जिसकी लगातार गतिविधियों ने पूरे इलाके में डर और सतर्कता का माहौल पैदा कर दिया है। वन विभाग ने हालात की गंभीरता को देखते हुए रेड अलर्ट जारी कर दिया है और आसपास के दर्जनों गांवों में लोगों को विशेष सावधानी बरतने की हिदायत दी जा रही है।

वन विभाग के अनुसार, यह झुंड पिछले कई दिनों से विजयनगर सर्कल के घने जंगलों, खासकर कंपार्टमेंट पी-3487 क्षेत्र में सक्रिय है। इस दल में 10 मादा, 7 नर और 5 शावक शामिल हैं, जो इसे और अधिक संवेदनशील बना देता है। विशेष रूप से सात नर हाथियों की मौजूदगी को लेकर विभाग अधिक सतर्क है, क्योंकि नर हाथी अक्सर अधिक आक्रामक व्यवहार के लिए जाने जाते हैं। वन अधिकारी Dayashankar Singh ने बताया कि विभाग की टीमें 24 घंटे हाथियों की गतिविधियों पर नजर रखे हुए हैं और उनके हर मूवमेंट को ट्रैक किया जा रहा है, ताकि किसी भी संभावित खतरे को समय रहते टाला जा सके।

ग्रामीण इलाकों में इस झुंड की मौजूदगी ने लोगों की दिनचर्या को भी प्रभावित कर दिया है। खेतों में काम करने जाना हो या जंगल से लकड़ी और महुआ लाना—हर काम अब जोखिम भरा हो गया है। वन विभाग ने मुनादी कराकर लोगों को चेताया है कि वे अकेले जंगल में न जाएं और रात के समय विशेष रूप से सतर्क रहें। संवेदनशील गांवों में निगरानी बढ़ा दी गई है और वनकर्मियों की अतिरिक्त टीमें तैनात की गई हैं।

इस खतरे की गंभीरता का अंदाजा हाल ही में हुई एक दर्दनाक घटना से लगाया जा सकता है। Chinia इलाके में महुआ बीनने गई एक किशोरी पर हाथियों के झुंड ने हमला कर दिया, जिसमें उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना के बाद से पूरे क्षेत्र में भय का माहौल है और प्रशासन ने सुरक्षा उपायों को और कड़ा कर दिया है। ग्रामीणों के चेहरों पर अब भी उस घटना का खौफ साफ देखा जा सकता है।

दरअसल, इस समय महुआ संग्रह का मौसम चल रहा है, जो ग्रामीणों की आजीविका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बड़ी संख्या में लोग रोजाना जंगलों की ओर जाते हैं, लेकिन हाथियों की बढ़ती गतिविधियों ने इस काम को बेहद खतरनाक बना दिया है। वन विभाग लगातार लोगों से अपील कर रहा है कि वे समूह में जाएं और किसी भी संदिग्ध हलचल की सूचना तुरंत दें।

विशेषज्ञों का मानना है कि हाथियों का इस तरह रिहायशी इलाकों के करीब आना एक गंभीर पर्यावरणीय संकेत है। जंगलों में भोजन और जल स्रोतों की कमी के कारण हाथी अब नए इलाकों की ओर बढ़ रहे हैं। यह स्थिति केवल बलरामपुर तक सीमित नहीं है, बल्कि देश के कई हिस्सों में मानव-वन्यजीव संघर्ष एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है।

वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि हाथियों को नुकसान पहुंचाने की बजाय उनके मूवमेंट को सुरक्षित दिशा में मोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए ट्रैकिंग, अलर्ट सिस्टम और स्थानीय लोगों की मदद ली जा रही है। हालांकि, यह काम आसान नहीं है, क्योंकि हाथियों का झुंड तेजी से स्थान बदलता है और घने जंगलों में उनकी निगरानी करना चुनौतीपूर्ण होता है।

ग्रामीणों का कहना है कि वे वर्षों से इस इलाके में रह रहे हैं, लेकिन इस तरह का खतरा पहले कभी नहीं देखा। कई लोग अब रात में जागकर पहरा दे रहे हैं, ताकि हाथी गांव में न घुस आएं। बच्चों और महिलाओं को विशेष रूप से घर से बाहर न निकलने की सलाह दी जा रही है।

यह पूरा घटनाक्रम एक बड़े सवाल की ओर इशारा करता है—क्या हम अपने जंगलों और वन्यजीवों के लिए पर्याप्त संसाधन और स्थान उपलब्ध करा पा रहे हैं? अगर नहीं, तो ऐसे संघर्ष आने वाले समय में और बढ़ सकते हैं। बलरामपुर की यह स्थिति केवल एक चेतावनी है कि प्रकृति के संतुलन के साथ छेड़छाड़ का असर अब सीधे मानव जीवन पर पड़ रहा है।

फिलहाल प्रशासन और वन विभाग पूरी तरह अलर्ट मोड में हैं, लेकिन असली चुनौती यही है कि इस खतरे को स्थायी रूप से कैसे टाला जाए। जब तक जंगलों में संसाधनों की कमी बनी रहेगी, तब तक हाथियों का यह भटकाव और मानव-वन्यजीव संघर्ष जारी रहने की आशंका बनी रहेगी।

उच्च भंडार और महंगी ढुलाई का असर: फरवरी में कोयला आयात 8.5% घटा, आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता भारत

नई दिल्ली। भारत में ऊर्जा क्षेत्र के बदलते समीकरणों के बीच कोयला आयात में आई ताजा गिरावट देश की नीतिगत दिशा और संसाधन प्रबंधन की मजबूती को दर्शाती है। फरवरी माह में कोयले का आयात 8.5 प्रतिशत घटकर 1.65 करोड़ टन रह गया, जो पिछले वर्ष इसी अवधि के 1.81 करोड़ टन की तुलना में उल्लेखनीय कमी है। यह गिरावट ऐसे समय में आई है जब देश में घरेलू कोयले का रिकॉर्ड स्तर पर भंडार मौजूद है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में समुद्री ढुलाई की लागत ऊंची बनी हुई है।

ऊर्जा की बढ़ती मांग के बावजूद आयात में कमी इस बात का संकेत है कि भारत अब अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए धीरे-धीरे घरेलू उत्पादन पर अधिक निर्भर हो रहा है। एमजंक्शन सर्विसेज लिमिटेड द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, फरवरी 2026 में आयात लगभग जनवरी (1.66 करोड़ टन) के स्तर के आसपास ही स्थिर रहा, लेकिन साल-दर-साल आधार पर इसमें स्पष्ट गिरावट देखी गई।

इस गिरावट के पीछे सबसे बड़ा कारण देश में कोयले का पर्याप्त भंडारण है। सरकारी और निजी क्षेत्र की खनन कंपनियों ने पिछले वर्षों में उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप बिजलीघरों और स्टॉकयार्ड में कोयले का स्तर संतोषजनक बना हुआ है। जब घरेलू आपूर्ति पर्याप्त हो, तो स्वाभाविक रूप से आयात की आवश्यकता कम हो जाती है।

दूसरी ओर, वैश्विक बाजार में समुद्री ढुलाई (फ्रेट) की कीमतों में मजबूती ने भी आयात को महंगा बना दिया है। आयातित कोयले की लागत बढ़ने से बिजली उत्पादक कंपनियां और अन्य उपभोक्ता घरेलू कोयले की ओर झुकाव दिखा रहे हैं। इससे विदेशी मुद्रा की बचत के साथ-साथ देश की आर्थिक स्थिरता को भी बल मिल रहा है। विनय वर्मा, जो एमजंक्शन सर्विसेज के प्रबंध निदेशक और सीईओ हैं, के अनुसार घरेलू भंडार अधिक होने और समुद्री परिवहन लागत ऊंची रहने के कारण तापीय (नॉन-कोकिंग) कोयले के आयात में गिरावट आई है। उनका मानना है कि खनन कंपनियां अपने मौजूदा स्टॉक को कम करने का प्रयास कर रही हैं, जिसके चलते आने वाले महीनों में भी आयात दबाव में रह सकता है।

आंकड़ों पर नजर डालें तो फरवरी में गैर-कोकिंग कोयले का आयात 98 लाख टन रहा, जो पिछले वर्ष के 1.1 करोड़ टन से कम है। यह वही कोयला है जिसका उपयोग मुख्य रूप से बिजली उत्पादन में किया जाता है। भारत जैसे तेजी से विकसित हो रहे देश में बिजली की मांग लगातार बढ़ रही है, लेकिन इसके बावजूद आयात में कमी यह दर्शाती है कि घरेलू उत्पादन इस मांग को काफी हद तक पूरा करने में सक्षम हो रहा है।

वहीं, कोकिंग कोयले के आयात में मामूली बढ़ोतरी दर्ज की गई है। फरवरी में यह 39 लाख टन रहा, जो पिछले वर्ष के 37.9 लाख टन से थोड़ा अधिक है। कोकिंग कोयला मुख्य रूप से इस्पात उद्योग में उपयोग होता है, जहां अभी भी भारत की निर्भरता आयात पर बनी हुई है। इसका कारण यह है कि देश में उच्च गुणवत्ता वाले कोकिंग कोयले के भंडार सीमित हैं।

यदि अप्रैल से फरवरी 2025-26 की अवधि को देखें, तो गैर-कोकिंग कोयले का कुल आयात 13.76 करोड़ टन रहा, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 15.22 करोड़ टन से कम है। यह गिरावट बताती है कि भारत ने ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में ठोस कदम बढ़ाए हैं। दूसरी ओर, कोकिंग कोयले का आयात 5.43 करोड़ टन तक पहुंच गया, जो पिछले वर्ष के 4.96 करोड़ टन से अधिक है—यह इस्पात क्षेत्र की बढ़ती मांग को दर्शाता है। ऊर्जा विशेषज्ञों का मानना है कि भारत की कोयला नीति अब "आत्मनिर्भरता" और "लागत दक्षता" के बीच संतुलन बनाने पर केंद्रित है। सरकार ने कोयला उत्पादन बढ़ाने, नई खदानों के आवंटन और निजी निवेश को प्रोत्साहित करने जैसे कई कदम उठाए हैं। इसके अलावा रेलवे और लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार कर घरेलू कोयले की आपूर्ति को और सुगम बनाया जा रहा है।

इस बदलाव का एक बड़ा फायदा यह भी है कि भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत कर रहा है। वैश्विक बाजार में किसी भी तरह के उतार-चढ़ाव या भू-राजनीतिक तनाव का असर अब पहले की तुलना में कम पड़ेगा। आयात पर निर्भरता कम होने से देश की ऊर्जा आपूर्ति अधिक स्थिर और विश्वसनीय बन रही है।

हालांकि, चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं। कोकिंग कोयले के मामले में आयात पर निर्भरता को कम करना आसान नहीं होगा। इसके लिए या तो घरेलू संसाधनों का बेहतर दोहन करना होगा या फिर वैकल्पिक तकनीकों और कच्चे माल की खोज करनी होगी। इसके अलावा पर्यावरणीय चिंताएं भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा हैं, क्योंकि कोयला एक प्रदूषणकारी ईंधन है।

सरकार इस दिशा में भी प्रयासरत है कि कोयले के उपयोग को अधिक स्वच्छ और कुशल बनाया जाए। 'क्लीन कोल टेक्नोलॉजी', गैसीफिकेशन और नवीकरणीय ऊर्जा के साथ संतुलन जैसे उपायों पर काम किया जा रहा है। इससे न केवल पर्यावरणीय प्रभाव कम होगा, बल्कि ऊर्जा क्षेत्र अधिक टिकाऊ भी बनेगा।

आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो कोयला आयात में कमी देश के चालू खाता घाटे (Current Account Deficit) को नियंत्रित करने में भी मददगार साबित हो सकती है। आयात घटने से विदेशी मुद्रा की बचत होती है, जिससे रुपये की स्थिरता बनी रहती है और अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि भारत कोयला क्षेत्र में अपनी इस प्रगति को किस हद तक बनाए रख पाता है। यदि घरेलू उत्पादन और आपूर्ति तंत्र को और मजबूत किया गया, तो देश न केवल अपनी जरूरतें पूरी कर सकेगा, बल्कि वैश्विक ऊर्जा बाजार में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

फिलहाल, फरवरी के आंकड़े स्पष्ट संकेत देते हैं कि भारत ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में सही मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। उच्च भंडार, वैश्विक कीमतों का दबाव और नीतिगत सुधार—इन तीनों कारकों ने मिलकर कोयला आयात को कम करने में अहम भूमिका निभाई है। यह बदलाव न केवल आर्थिक रूप से लाभकारी है, बल्कि दीर्घकाल में देश की ऊर्जा सुरक्षा को भी मजबूत आधार प्रदान करता है।

भ्रामक प्रचार बनाम विकास की राजनीति: ऊना से सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू का भाजपा पर तीखा हमला

हिमाचल प्रदेश की राजनीति इन दिनों एक बार फिर गरमा गई है। ऊना की धरती से मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने जिस अंदाज में भारतीय जनता पार्टी पर हमला बोला, उसने न केवल प्रदेश बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी राजनीतिक बहस को तेज कर दिया है। सुक्खू ने अपने संबोधन में साफ शब्दों में कहा कि भाजपा "भ्रामक प्रचार" के जरिए जनता के बीच भ्रम फैलाकर राजनीतिक जमीन तैयार करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और तथाकथित इन्फ्लुएंसर्स का इस्तेमाल कर राज्य सरकार की छवि को नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

ऊना में आयोजित प्रेस वार्ता महज एक राजनीतिक बयानबाजी नहीं थी, बल्कि यह एक व्यापक रणनीतिक संदेश भी था, जिसमें सुक्खू ने अपनी सरकार की उपलब्धियों को आंकड़ों के साथ पेश करते हुए विपक्ष के आरोपों को खारिज करने की कोशिश की। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि उनकी सरकार पारदर्शिता, जवाबदेही और जनहित के आधार पर काम कर रही है, जबकि विपक्ष केवल भ्रम और प्रचार के सहारे राजनीति कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने अपने भाषण में यह भी कहा कि उनकी सरकार ने प्रशासनिक ढांचे को मजबूत किया है और निर्णय लेने की प्रक्रिया को संस्थागत बनाया है। उन्होंने आरोप लगाया कि पूर्व भाजपा सरकार के दौरान "अधिकारी तंत्र हावी" था और जनप्रतिनिधियों की भूमिका सीमित हो गई थी। इसके विपरीत, वर्तमान सरकार में हर निर्णय मंत्रिमंडल स्तर पर लिया जा रहा है, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित हो रही है।

राजनीतिक हमले के बीच सुक्खू ने भाजपा के आंतरिक हालात पर भी निशाना साधा। उन्होंने नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर का नाम लेते हुए कहा कि भाजपा खुद गुटबाजी से जूझ रही है और पार्टी के भीतर कई धड़े नेतृत्व परिवर्तन की मांग कर रहे हैं। उनके

इस बयान को राजनीतिक विश्लेषक भाजपा के अंदर चल रही खींचतान को उजागर करने की कोशिश के रूप में देख रहे हैं।

प्रेस वार्ता के दौरान मुख्यमंत्री ने 2023 की प्राकृतिक आपदा का भी विस्तार से जिक्र किया। उन्होंने बताया कि उस दौरान राज्य में 23,000 से अधिक मकान आंशिक या पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हुए और हजारों लोग बेघर हो गए थे। इस संकट की घड़ी में सरकार ने राहत और पुनर्वास कार्यों को प्राथमिकता दी और प्रभावित परिवारों को अधिकतम 7 लाख रुपये तक की सहायता प्रदान की गई। उन्होंने मनाली क्षेत्र का उदाहरण देते हुए बताया कि वहां फंसे करीब 75,000 पर्यटकों को सुरक्षित निकालने के लिए बड़े पैमाने पर राहत अभियान चलाया गया।

आर्थिक मोर्चे पर सुक्खू ने पूर्व सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि जब उनकी सरकार सत्ता में आई, तब राज्य पर 76,633 करोड़ रुपये का भारी कर्ज था। उन्होंने दावा किया कि पिछले तीन वर्षों में सरकार ने 10,325 करोड़ रुपये मूलधन और 15,931 करोड़ रुपये ब्याज के रूप में चुकाए हैं। इसके बावजूद वित्तीय दबाव के कारण राज्य को 35,542 करोड़ रुपये का अतिरिक्त ऋण लेना पड़ा। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि पूर्व भाजपा सरकार के समय कर्ज का स्तर लगभग 48,000 करोड़ रुपये था, जो बाद में तेजी से बढ़ा।

सुक्खू ने केंद्र सरकार पर भी अप्रत्यक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा कि आपदा के बाद घोषित 1,500 करोड़ रुपये का राहत पैकेज अभी तक राज्य को प्राप्त नहीं हुआ है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य के मुद्दों को संसद में प्रभावी तरीके से नहीं उठाया गया, जिससे हिमाचल को उसका हक नहीं मिल पा रहा है। सामाजिक कल्याण योजनाओं का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार आम जनता के जीवन स्तर को सुधारने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने एक लाख परिवारों को 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली देने की योजना का उल्लेख किया। इसके साथ ही पात्र महिलाओं को प्रति माह 1,500 रुपये की आर्थिक सहायता देने की योजना पर भी काम किया जा रहा है। इन योजनाओं को उन्होंने "जनकल्याण की दिशा में ठोस कदम" बताया। औद्योगिक नीति पर बोलते हुए सुक्खू ने कहा कि पिछली सरकार ने बड़े उद्योगपतियों को रियायती दरों पर भूमि उपलब्ध कराई, जिससे राज्य को अपेक्षित लाभ नहीं मिला। इसके विपरीत, उनकी सरकार संसाधनों के बेहतर उपयोग और राजस्व बढ़ाने पर ध्यान दे रही है। उन्होंने एक होटल परियोजना का उदाहरण देते हुए बताया कि उससे करीब 400 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया गया है, जो राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में सहायक साबित होगा।

इस पूरे घटनाक्रम के बीच यह स्पष्ट हो जाता है कि हिमाचल प्रदेश में राजनीति अब केवल विकास के मुद्दों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसमें डिजिटल प्रचार, छवि निर्माण और जनभावनाओं को प्रभावित करने की रणनीतियां भी शामिल हो गई हैं। सुक्खू का यह बयान इसी बदलती राजनीतिक संस्कृति की ओर इशारा करता है, जहां सूचना और प्रचार दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आने वाले समय में हिमाचल प्रदेश की राजनीति और भी दिलचस्प होने वाली है। एक ओर सत्तारूढ़ कांग्रेस अपनी उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने की कोशिश कर रही है, वहीं दूसरी ओर भाजपा सरकार की नीतियों और फैसलों पर सवाल उठाकर अपनी जमीन मजबूत करने में लगी है।

ऊना की इस प्रेस वार्ता ने यह साफ कर दिया है कि प्रदेश में सियासी मुकाबला अब तेज हो चुका है। मुख्यमंत्री सुक्खू ने जहां अपनी सरकार की उपलब्धियों को विस्तार से गिनाया, वहीं विपक्ष पर तीखे हमले कर राजनीतिक संदेश देने की कोशिश की। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि भाजपा इन आरोपों का किस तरह जवाब देती है और क्या यह सियासी टकराव आने वाले चुनावों में कोई बड़ा असर डालता है।

फिलहाल, इतना तय है कि हिमाचल प्रदेश की राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर चुकी है, जहां विकास, आंकड़े, प्रचार और आरोप—सब कुछ एक साथ चल रहा है। जनता के सामने अब यह चुनौती है कि वह इन दावों और आरोपों के बीच सच को पहचाने और अपने भविष्य का निर्णय करे।

मुजफ्फरनगर हादसा: फ्लाईओवर से 150 फीट नीचे गिरी कार, तीन युवकों की मौत; दो की हालत गंभीर

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में एक बार फिर तेज रफ्तार ने ऐसी भयावह त्रासदी को जन्म दिया, जिसने न केवल तीन परिवारों के चिराग बुझा दिए बल्कि पूरे इलाके को शोक और स्तब्धता में डुबो दिया। पानीपत-खटीमा मार्ग पर स्थित फ्लाईओवर से एक अनियंत्रित कार के करीब 150 फीट नीचे गिरने की घटना ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर कब तक सड़कें लापरवाही और रफ्तार के हवाले होती रहेंगी। यह हादसा सिर्फ एक दुर्घटना नहीं, बल्कि आधुनिक जीवन की उस जल्दबाजी का प्रतीक है, जिसमें इंसान समय से आगे निकलने की कोशिश में अपनी ही जिंदगी को पीछे छोड़ देता है।

घटना छपार थाना क्षेत्र की है, जहां एक तेज रफ्तार क्रेटा कार फ्लाईओवर पर चलते-चलते अचानक अनियंत्रित हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, कार की गति इतनी अधिक थी कि चालक उसे संभाल नहीं सका और वाहन सीधे फ्लाईओवर की रेलिंग तोड़ते हुए नीचे गन्ने के खेत में जा गिरा। गिरने की ऊंचाई इतनी ज्यादा थी कि कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार पांचों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के तुरंत बाद आसपास मौजूद लोगों में अफरा-तफरी मच गई और मदद के लिए चीख-पुकार गूंजने लगी।

सूचना मिलते ही पुलिस और राहत दल मौके पर पहुंचे। क्षतिग्रस्त कार के भीतर फंसे युवकों को निकालना आसान नहीं था, क्योंकि वाहन बुरी तरह पिचक चुका था। काफी मशक्कत के बाद सभी घायलों को बाहर निकाला गया और एंबुलेंस की सहायता से अस्पताल पहुंचाया गया। लेकिन वहां पहुंचते-पहुंचते तीन युवकों—सागर, हिमांशु और यश—की सांसें थम चुकी थीं। डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया, जबकि दो अन्य युवक वरुण और शशांक गंभीर हालत में जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहे हैं। उन्हें बेहतर इलाज के लिए मेरठ मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है।

बताया जा रहा है कि सभी युवक हरियाणा के गुड़गांव के निवासी थे और किसी निजी कार्य से यात्रा कर रहे थे। उनकी उम्र महज 24 से 25 वर्ष के बीच थी—एक ऐसा दौर, जब जिंदगी अपने सबसे ऊर्जावान और संभावनाओं से भरे पड़ाव पर होती है। लेकिन एक पल की लापरवाही ने उनके सपनों, उनके परिवारों की उम्मीदों और उनके भविष्य को हमेशा के लिए खत्म कर दिया।

इस हादसे ने कई महत्वपूर्ण सवाल खड़े किए हैं। सबसे बड़ा सवाल है—क्या हमारी सड़कों पर सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम हैं? फ्लाईओवर की रेलिंग इतनी कमजोर कैसे साबित हुई कि एक कार उसे तोड़ते हुए नीचे जा गिरी? क्या नियमित निरीक्षण और रखरखाव में कहीं कमी रह गई थी? या फिर यह पूरी तरह से चालक की लापरवाही का नतीजा था? पुलिस इन सभी पहलुओं की जांच कर रही है, लेकिन प्रारंभिक तौर पर तेज रफ्तार को ही इस दुर्घटना का मुख्य कारण माना जा रहा है।

एसएसपी संजय कुमार वर्मा ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और सभी जरूरी कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है और परिजनों को सूचित कर दिया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि हादसे के कारणों की गहराई से जांच की जाएगी और यदि किसी प्रकार की लापरवाही सामने आती है, तो उसके अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

यह घटना केवल एक सड़क हादसा नहीं है, बल्कि समाज के लिए एक चेतावनी भी है। आज के दौर में तेज रफ्तार को अक्सर रोमांच और स्टेटस से जोड़कर देखा जाता है, खासकर युवाओं में। लेकिन यह भूल जाना कि सड़क पर एक छोटी सी गलती भी जानलेवा हो सकती है, ऐसी ही घटनाओं को जन्म देता है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में हर साल हजारों लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते हैं, जिनमें एक बड़ा हिस्सा तेज रफ्तार और लापरवाही के कारण होता है।

इस हादसे के बाद स्थानीय लोगों में भी आक्रोश और चिंता का माहौल है। उनका कहना है कि इस मार्ग पर अक्सर तेज रफ्तार वाहन चलते हैं और कई बार पहले भी छोटे-मोटे हादसे हो चुके हैं। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि इस क्षेत्र में स्पीड लिमिट को सख्ती से लागू किया जाए, सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं और फ्लाईओवर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया जाए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। मृतकों के परिवारों पर इस घटना का गहरा असर पड़ा है। जिन घरों में कुछ समय पहले तक हंसी-खुशी का माहौल था, वहां अब मातम पसरा हुआ है। माता-पिता, जो अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के सपने देख रहे थे, अब उनके बिछड़ने के दर्द से टूट चुके हैं। यह हादसा केवल तीन जिंदगियों का अंत नहीं, बल्कि कई परिवारों के सपनों का भी अंत है।

सड़क सुरक्षा को लेकर सरकार और प्रशासन द्वारा समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं, लेकिन उनका असर तब तक सीमित रहता है, जब तक लोग स्वयं जिम्मेदारी नहीं समझते। हेलमेट पहनना, सीट बेल्ट लगाना, निर्धारित गति सीमा का पालन करना—ये सभी बातें केवल नियम नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा के मूल आधार हैं।

इस दर्दनाक घटना ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि सड़क पर सावधानी ही सबसे बड़ी सुरक्षा है। एक छोटी सी चूक, एक पल की लापरवाही और तेज रफ्तार का जुनून—ये सभी मिलकर जिंदगी को पलभर में खत्म कर सकते हैं। जरूरत है कि हम सबक लें, जागरूक बनें और दूसरों को भी जागरूक करें।

फिलहाल, पुलिस अपनी जांच में जुटी है और घायलों का इलाज जारी है। लेकिन जो तीन जिंदगियां इस हादसे में खत्म हो गईं, उन्हें वापस नहीं लाया जा सकता। उनकी यादें, उनके सपने और उनके अधूरे अरमान अब सिर्फ उनके परिवारों के दिलों में ही जीवित रहेंगे। यह हादसा हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम अपनी जिंदगी को इतनी सस्ती समझ बैठे हैं कि कुछ मिनट बचाने के लिए उसे दांव पर लगा दें? अगर नहीं, तो अब समय है कि हम अपनी सोच बदलें, नियमों का पालन करें और सड़क को सुरक्षित बनाने में अपनी भूमिका निभाएं। यही उन तीन युवकों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी, जिन्होंने अपनी जान गंवाकर हमें एक कड़वा सबक दिया है।

खुफिया सूचना ने बचाईं मासूम जिंदगियां: पटना–पुणे एक्सप्रेस से 167 बच्चे उतारे गए, तस्करी की आशंका से हड़कंप

कटनी। मध्य प्रदेश के कटनी रेलवे स्टेशन पर शनिवार देर रात एक बेहद संवेदनशील और चौंकाने वाली कार्रवाई में 167 बच्चों को पटना–पुणे एक्सप्रेस से उतारकर सुरक्षित संरक्षण में लिया गया। यह पूरा ऑपरेशन खुफिया इनपुट के आधार पर अंजाम दिया गया, जिसने न केवल संभावित मानव तस्करी की आशंका को उजागर किया, बल्कि बाल सुरक्षा तंत्र की सतर्कता और तत्परता को भी सामने रखा। घटना ने प्रशासनिक हलकों से लेकर आम लोगों तक चिंता की लहर पैदा कर दी है। 7 से 15 वर्ष की आयु के इन बच्चों का एक साथ, समूहों में लंबी दूरी की यात्रा करना और उनके साथ पर्याप्त स्पष्ट दस्तावेजों का अभाव—इन सभी ने इस पूरे मामले को बेहद गंभीर बना दिया है।

सूचना मिलते ही रेलवे सुरक्षा बल (RPF), जीआरपी, महिला एवं बाल विकास विभाग और बाल संरक्षण इकाइयों की संयुक्त टीम सक्रिय हो गई। जैसे ही पटना–पुणे एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म नंबर-3 पर पहुंची, सुरक्षा एजेंसियों ने ट्रेन को चारों ओर से घेर लिया और एक सुनियोजित तलाशी अभियान शुरू किया। S-1, S-2, S-3, S-4 और S-7 कोचों में सवार बच्चों को चिन्हित कर एक-एक कर नीचे उतारा गया।

यह पूरा दृश्य बेहद संवेदनशील था—छोटे-छोटे बच्चे, कुछ डरे हुए, कुछ अनजान, और कुछ इस बात से भी बेखबर कि आखिर उनके साथ क्या हो रहा है। सुरक्षा एजेंसियों ने उन्हें तुरंत सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया और प्राथमिक देखभाल सुनिश्चित की।

प्रारंभिक जांच में यह सामने आया कि इन बच्चों में से अधिकांश बिहार के सीमांचल क्षेत्र से हैं, जो पहले से ही आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों से जूझता रहा है। इस क्षेत्र से बच्चों का इस तरह बड़े पैमाने पर बाहर ले जाना कई सवाल खड़े करता है। बच्चों के साथ मौजूद एक व्यक्ति, जिसने अपना नाम सद्दाम बताया, ने दावा किया कि वह इन बच्चों को महाराष्ट्र के लातूर स्थित एक मदरसे में पढ़ाई के लिए ले जा रहा था। उसने यह भी कहा कि वह पिछले करीब 10 वर्षों से इसी तरह बच्चों को ले जाता रहा है। उसके अनुसार, उसके समूह में लगभग 100 बच्चे शामिल थे, जबकि बाकी बच्चों के साथ अ ल ग - अ ल ग लोग मौजूद थे।

हालांकि, प्रशासन इस दावे को सतही तौर पर स्वीकार करने के बजाय हर पहलू की गंभीरता से जांच कर रहा है। अधिकारियों का कहना है कि केवल मौखिक दावे पर्याप्त नहीं हैं—बच्चों के परिवहन से जुड़े सभी दस्तावेज, अभिभावकों की लिखित सहमति, संबंधित संस्थान की वैधता और बच्चों की वास्तविक स्थिति की पुष्टि आवश्यक है।

इस कार्रवाई के बाद बच्चों को अलग-अलग संरक्षण गृहों में भेजा गया है। लगभग 80 बच्चों को जबलपुर के बाल गृह में स्थानांतरित किया गया है, जबकि शेष बच्चों को कटनी के बाल संरक्षण गृह में रखा गया है। यहां उनकी काउंसलिंग कराई जा रही है, ताकि उनके मानसिक और भावनात्मक स्थिति को समझा जा सके।

बाल संरक्षण अधिकारियों की टीम लगातार बच्चों से बातचीत कर रही है। यह जानने की कोशिश की जा रही है कि वे कहां से आए हैं, उन्हें किसने भेजा, और क्या उन्हें यात्रा के उद्देश्य की पूरी जानकारी थी। कई मामलों में यह पाया गया है कि बच्चों को अक्सर "पढ़ाई" या "नौकरी" के नाम पर बहला-फुसलाकर ले जाया जाता है, जो बाद में मानव तस्करी या बाल श्रम के जाल में बदल सकता है।

प्रशासन ने बच्चों के परिजनों से संपर्क स्थापित करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि हर बच्चे की पहचान सही तरीके से हो और उसे उसके परिवार तक सुरक्षित पहुंचाया जा सके।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर देश में बाल तस्करी और बाल सुरक्षा के मुद्दे को केंद्र में ला दिया है। विशेषज्ञों का मानना है कि आर्थिक रूप से कमजोर क्षेत्रों में रहने वाले परिवार अक्सर बेहतर भविष्य की उम्मीद में अपने बच्चों को बाहर भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन कई बार यही भरोसा उनके बच्चों के लिए खतरा बन जाता है। कटनी की यह घटना इस बात का उदाहरण है कि यदि समय रहते खुफिया जानकारी मिल जाए और एजेंसियां सक्रिय हो जाएं, तो बड़ी घटनाओं को टाला जा सकता है। यह भी स्पष्ट हुआ है कि विभिन्न विभागों के बीच समन्वय कितना महत्वपूर्ण है—RPF, जीआरपी, महिला एवं बाल विकास विभाग और बाल संरक्षण इकाइयों ने मिलकर जिस तरह यह ऑपरेशन अंजाम दिया, वह सराहनीय है।

फिलहाल, प्रशासन ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि जांच में किसी भी प्रकार की अनियमितता, धोखाधड़ी या मानव तस्करी के संकेत मिलते हैं, तो संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

यह मामला केवल एक कार्रवाई नहीं, बल्कि एक चेतावनी भी है—समाज के लिए, प्रशासन के लिए और उन सभी के लिए जो बच्चों के भविष्य से जुड़े हैं। यह याद दिलाता है कि सतर्कता, जागरूकता और समय पर कार्रवाई ही मासूम जिंदगियों को सुरक्षित रख सकती है।

कटनी स्टेशन पर उतारे गए ये 167 बच्चे फिलहाल सुरक्षित हैं, लेकिन उनके पीछे छिपी कहानी अभी पूरी तरह सामने आना बाकी है। जांच के नतीजे यह तय करेंगे कि यह केवल एक संयोग था या फिर किसी बड़े नेटवर्क की कड़ी—जिसका पर्दाफाश अभी होना बाकी है।

मधुमक्खी पालन और कृषि निर्यात को राहत का इंतजार वैश्विक संकट के बीच सीएआई की सरकार से बड़ी मांग

नई दिल्ली। वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव और पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर पड़ रहे गहरे असर के बीच भारत का मधुमक्खी पालन और कृषि निर्यात क्षेत्र एक बड़े संकट के दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय में उद्योग से जुड़े संगठनों ने सरकार से तत्काल हस्तक्षेप की मांग तेज कर दी है। Confederation of Apiculture Industry (सीएआई) ने केंद्र सरकार और Reserve Bank of India (आरबीआई) से अपील की है कि मधुमक्खी पालन (एपिकल्चर) और कृषि निर्यात को भी उन विशेष राहत योजनाओं में शामिल किया जाए, जो हाल ही में निर्यातकों के लिए घोषित की गई हैं।

सीएआई के अध्यक्ष Devvrat Sharma ने प्रधानमंत्री, वित्त मंत्री और आरबीआई गवर्नर को भेजे गए विस्तृत प्रतिनिधित्व में इस क्षेत्र की चुनौतियों को रेखांकित करते हुए कहा है कि यदि समय रहते राहत नहीं दी गई, तो यह उद्योग गंभीर आर्थिक संकट में फंस सकता है। उनका कहना है कि यह केवल एक उद्योग का मामला नहीं है, बल्कि इससे जुड़े लाखों किसानों, मधुमक्खी पालकों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आजीविका का सवाल भी है।

दरअसल, हाल ही में आरबीआई ने वैश्विक व्यापार में आ रही बाधाओं को देखते हुए निर्यातकों के लिए कई महत्वपूर्ण राहत उपायों की घोषणा की थी। इन उपायों के तहत निर्यात प्राप्तियों की समय-सीमा को 9 महीने से बढ़ाकर 15 महीने कर दिया गया है। इसके अलावा प्री-शिपमेंट और पोस्ट-शिपमेंट क्रेडिट की चुकौती अवधि को भी 90-90 दिनों से बढ़ाकर 450 दिन तक कर दिया गया है। साथ ही बैंकों को यह छूट दी गई है कि वे निर्यातकों को क्रेडिट सीमा और मार्जिन में लचीलापन दें तथा ऋण की किस्तों और ब्याज भुगतान में भी राहत प्रदान करें।

इन सभी कदमों को उद्योग जगत ने सकारात्मक बताया है, लेकिन सीएआई का कहना है कि मधुमक्खी पालन और कृषि निर्यात जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को इन राहत उपायों के दायरे से बाहर रखा गया है, जो कि एक बड़ी चिंता का विषय है। विशेष रूप से शहद निर्यात उद्योग, जो भारत की कृषि आधारित निर्यात प्रणाली का अहम हिस्सा है, इस समय कई स्तरों पर दबाव झेल रहा है। पश्चिम एशिया में जारी तनाव ने वैश्विक लॉजिस्टिक्स नेटवर्क को प्रभावित किया है। समुद्री मार्गों में बाधाएं, परिवहन लागत में वृद्धि और निर्यात खेपों में देरी जैसी समस्याएं अब आम हो गई हैं। इसका सीधा असर भुगतान चक्र पर पड़ा है, जिससे निर्यातकों को समय पर भुगतान नहीं मिल पा रहा है। इससे कार्यशील पूंजी (वर्किंग कैपिटल) पर भारी दबाव बन गया है, खासकर उन छोटे और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए, जो सीमित संसाधनों के साथ काम करते हैं।

सीएआई के अनुसार, इस क्षेत्र को कई मोर्चों पर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। विदेशी खरीदारों द्वारा ऑर्डर रद्द या स्थगित किए जा रहे हैं, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में गिरावट आई है, और नकदी प्रवाह बाधित होने के कारण उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखला पर भी असर पड़ रहा है। इन परिस्थितियों में यदि वित्तीय राहत नहीं दी गई, तो कई छोटे उत्पादकों और निर्यातकों के लिए टिके रहना मुश्किल हो जाएगा। भारत का शहद निर्यात मुख्य रूप से दो बड़े बाजारों—अमेरिका और पश्चिम एशिया—पर निर्भर है। आंकड़ों के अनुसार, देश के कुल शहद निर्यात का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा अमेरिका को जाता है, जबकि करीब 20 प्रतिशत निर्यात पश्चिम एशियाई देशों में होता है। ऐसे में इन क्षेत्रों में उत्पन्न किसी भी प्रकार की अस्थिरता का सीधा प्रभाव भारतीय निर्यातकों पर पड़ता है।

नवाचार की रफ्तार तेज: भारत में पेटेंट आवेदनों ने छुआ नया शिखर, 2025-26 में 30% से अधिक वृद्धि

नई दिल्ली। भारत में नवाचार और अनुसंधान के क्षेत्र में तेजी से हो रही प्रगति का एक और सशक्त प्रमाण सामने आया है। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री Piyush Goyal ने जानकारी देते हुए बताया कि वित्त वर्ष 2025-26 में देश में पेटेंट आवेदनों की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है। इस अवधि में कुल 1,43,729 पेटेंट आवेदन दाखिल किए गए, जो पिछले वर्ष के 1,10,375 आवेदनों की तुलना में 30.2 प्रतिशत अधिक है।

यह आंकड़ा न केवल भारत की नवाचार क्षमता को दर्शाता है, बल्कि यह भी संकेत देता है कि देश तेजी से वैश्विक बौद्धिक संपदा (Intellectual Property Rights – IPR) प्रणाली में अपनी मजबूत पहचान बना रहा है। वर्तमान में भारत पेटेंट दाखिल करने के मामले में दुनिया का छठा सबसे बड़ा देश बन चुका है, जो अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मंत्री Piyush Goyal ने सोशल मीडिया के माध्यम से इस उपलब्धि पर खुशी जताते हुए कहा कि यह वृद्धि सरकार द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकारों के तंत्र को मजबूत करने के लिए उठाए गए कदमों का परिणाम है। उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया कि कुल आवेदनों में से 69 प्रतिशत से अधिक पेटेंट घरेलू स्तर पर दाखिल किए गए हैं। इसका अर्थ है कि भारत के भीतर ही नवाचार और अनुसंधान की संस्कृति तेजी से विकसित हो रही है।

राज्यों की बात करें तो तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। इन राज्यों में मजबूत औद्योगिक ढांचा, तकनीकी संस्थानों की उपलब्धता और स्टार्टअप इकोसिस्टम के कारण नवाचार को बढ़ावा मिल रहा है। खासकर बेंगलुरु, चेन्नई और मुंबई जैसे

शहर तकनीकी विकास और रिसर्च के प्रमुख केंद्र बनकर उभरे हैं।

यदि पिछले वर्षों के आंकड़ों पर नजर डालें, तो यह स्पष्ट होता है कि भारत में पेटेंट आवेदनों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वर्ष 2016-17 में जहां यह संख्या 45,444 थी, वहीं इसके बाद हर साल इसमें वृद्धि दर्ज की गई। 2017-18 में 47,894, 2018-19 में 50,660, 2019-20 में 56,268, 2020-21 में 58,503, 2021-22 में 66,440, 2022-23 में 82,208 और 2023-24 में 92,163 आवेदन दाखिल किए गए। इस तरह लगभग एक दशक में पेटेंट आवेदनों की संख्या तीन गुना से अधिक बढ़ चुकी है।

इस निरंतर वृद्धि के पीछे सरकार की नीतियां और पहल अहम भूमिका निभा रही हैं। केंद्र सरकार ने स्टार्टअप, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) तथा शैक्षणिक संस्थानों को ध्यान में रखते हुए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इनमें पेटेंट आवेदन शुल्क में छूट, त्वरित जांच (Fast-track examination) की सुविधा और स्टार्टअप्स के लिए मुफ्त सहायता जैसी योजनाएं शामिल हैं।

इन पहलों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छोटे उद्यमी और युवा नवोन्मेषक भी आसानी से अपने आविष्कारों को पेटेंट करा सकें। पहले जहां पेटेंट प्रक्रिया जटिल और महंगी मानी जाती थी, वहीं अब इसे अधिक सुलभ और पारदर्शी बनाया गया है। इससे देश में इनोवेशन का माहौल और मजबूत हुआ है। विशेषज्ञों का मानना है कि पेटेंट आवेदनों में यह वृद्धि भारत की अर्थव्यवस्था के लिए भी सकारात्मक संकेत है। जब किसी देश में अधिक संख्या में पेटेंट दाखिल होते हैं, तो इसका मतलब होता है कि वहां नए उत्पाद, तकनीक और समाधान विकसित हो रहे हैं। इससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी देश की स्थिति मजबूत होती है।

भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम का तेजी से विस्तार भी इस वृद्धि का एक प्रमुख कारण है। पिछले कुछ वर्षों में देश में हजारों नए स्टार्टअप्स उभरे हैं, जो तकनीक, हेल्थकेयर, फिनटेक, एग्रीटेक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में नवाचार कर रहे हैं। ये स्टार्टअप्स अपने उत्पादों और तकनीकों को सुरक्षित रखने के लिए पेटेंट का सहारा ले रहे हैं।

इसके अलावा, शैक्षणिक संस्थानों और रिसर्च संगठनों की भूमिका भी अहम होती जा रही है। IITs, NITs और अन्य विश्वविद्यालय अब केवल शिक्षा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि रिसर्च और इनोवेशन के केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हैं। छात्रों और शोधकर्ताओं को पेटेंट दाखिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे नई खोजों को व्यावसायिक रूप दिया जा सके। हालांकि, चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं। पेटेंट की गुणवत्ता, जांच प्रक्रिया की गति और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा जैसे मुद्दों पर लगातार सुधार की आवश्यकता है। साथ ही, यह भी जरूरी है कि अधिक से अधिक लोग बौद्धिक संपदा अधिकारों के महत्व को समझें और अपने नवाचारों को सुरक्षित करें।

आने वाले समय में भारत का लक्ष्य न केवल पेटेंट आवेदनों की संख्या बढ़ाना है, बल्कि उनकी गुणवत्ता और व्यावसायिक उपयोगिता को भी बेहतर बनाना है। सरकार और उद्योग जगत के संयुक्त प्रयासों से यह संभव हो सकता है कि भारत वैश्विक नवाचार केंद्र के रूप में उभरे।

फिलहाल, 2025-26 के आंकड़े यह स्पष्ट संकेत देते हैं कि भारत नवाचार की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। पेटेंट आवेदनों में 30 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि देश में प्रतिभा, अवसर और समर्थन—तीनों का सही संतुलन बन रहा है। यदि यही रफ्तार बनी रही, तो आने वाले वर्षों में भारत वैश्विक तकनीकी और औद्योगिक विकास में और बड़ी भूमिका निभा सकता है।